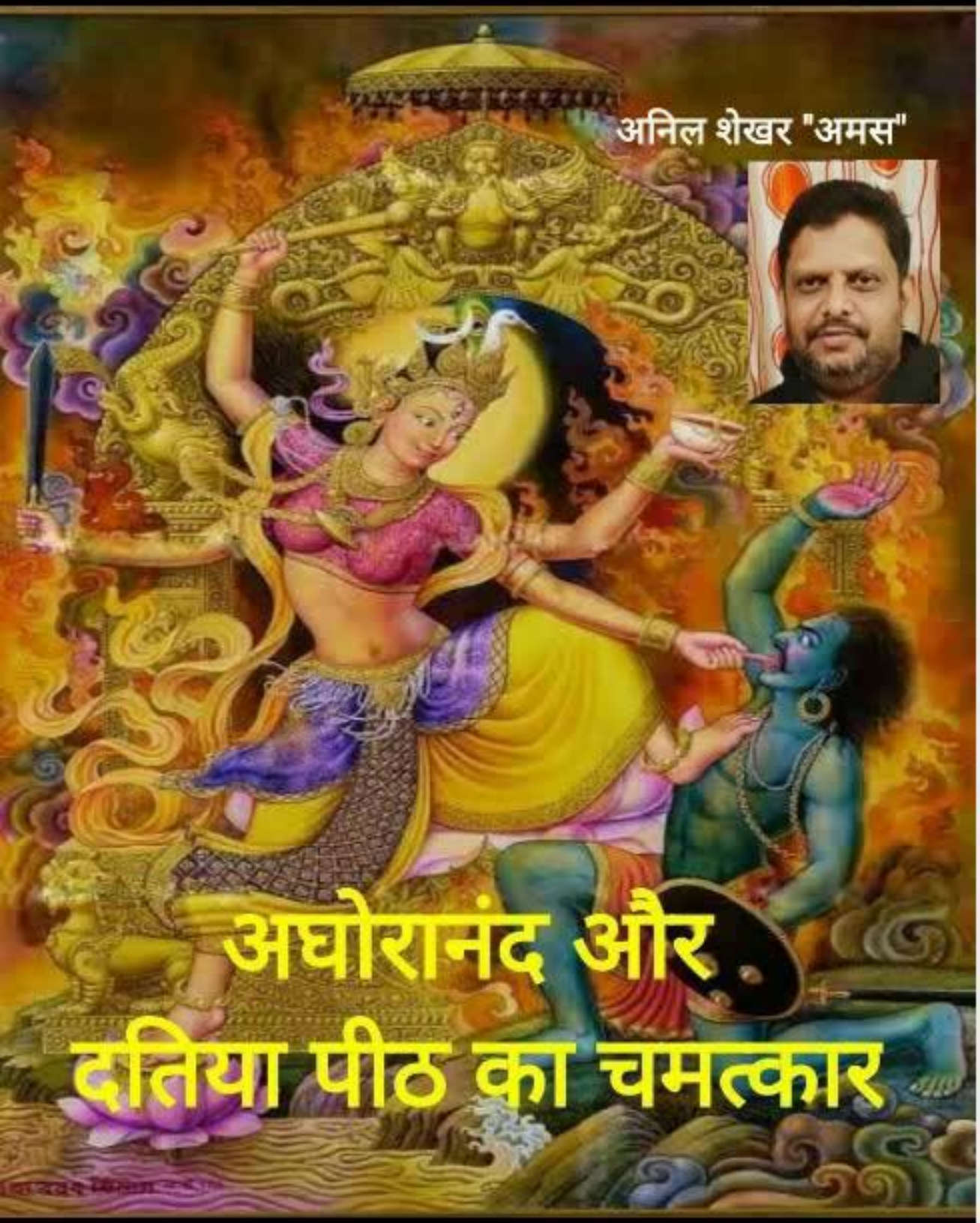
अनिल शेखर "अमस"
अघोरानंद और
दतिया पीठ का चमत्कार

पूर्वपीठिका

॥ श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ ..... यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

मेरी इस कथा का नायक ,मैं , यानि "अघोरानंद", एक गृहस्थ है । जो शासकीय सेवा में था और छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग नामक शहर में रहता था । मेरी पत्नी का युवावस्था में ही देहांत हो गया । उसके देहांत के बाद मैं बेहद अकेला पड़ गया । कुछ समय बाद मेरे जीवन में अजीब अजीब सी घटनाएं घटी । मेरे गुरु ने मुझे अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे अघोरानंद नाम दिया । जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ ।

साधनात्मक जीवन में मुझे अलग-अलग प्रकार के अनुभव मिले । जिसमें कई बातें ऐसी हैं ....जो नहीं

लिखी जा सकती ! और कई बातें ऐसी हैं ..... जो अविश्वसनीय है । बहुत सारी बातें ऐसी हैं.... जो बेहद रोमांचक हैं ! जिसे पढ़ने में आपको आनंद भी आएगा । ऐसी ही कुछ घटनाओं को गुरु के आशीर्वाद से ! भगवती महानील सरस्वती की कृपा से ! शब्द श्रंखला में बांधने का प्रयास किया है जो आपको पसंद आएगा ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है ।

अंत में .....यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है ....

उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

भूमिका

मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेद्यां,
सिंहासनो परिगतां परिपीत प्रणाम,
पीताम्बरा भरण माल्य विभूषिताङ्गीं
देवीं भजामि धृत मुद्गर वैरिजिह्वाम ॥

जो संसार सागर के बीच में मणियों से सजे हुए मंडप में सिंहासन पर स्वयं विराजमान है,और पीले रंग के माला आभूषण तथा वस्त्रों से सुसज्जित है । जो अपने बाएं हाथ में शत्रु की जिह्वा को पकड़कर दाहिने हाथ में स्थित मुद्गर से ताड़न करने के लिए आतुर हैं । ऐसी देवी महामाया महाविद्या बगलामुखी के दिव्य तेजस्वी अद्भुत स्वरूप को मैं दंडवत प्रणाम करता हूँ ।

जिह्वाग्र मादाय करेण देवीं,
वामेन शत्रून परिपीडयन्तीम,
गदाभिघातेन च दक्षिणेन,
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥
शत्रु की जिह्वा को अपने बाएं हाथ से पकड़ कर, दाएं हाथ से उसे अपने हाथ में पकड़े हुए गदा से मारने के

लिए आतुर मुद्रा मे खड़ी हुई महामाया के दिव्य स्वरूप द्विभुजा महाविद्या बगलामुखी को मैं हृदय से प्रणाम करता हूं ...

हे महामाया बगलामुखी !

मेरे शब्दों में वह सामर्थ्य नहीं है और मेरी लेखनी में वह शक्ति नहीं है कि मैं आप के विषय में कुछ भी लिख सकूं .....

फिर भी एक अबोध शिशु की लालसा के रूप में अपने श्री चरणों में इन तुच्छ शब्द पुष्पों को स्वीकार करें ....

मेरे लेखन में किसी प्रकार की न्यूनता या अभद्रता रह जाए तो उसके लिए मैं आपसे क्षमा प्रदान करने की प्रार्थना करता हुआ इस कथा को प्रारंभ कर रहा हूं .....

क्षमस्व परमेश्वरी !

क्षमस्व परमेश्वरी !!

क्षमस्व परमेश्वरी !!!

चरण रज

अनिल शेखर "अमस"

अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार

देवी के दस स्वरूप माने गए हैं । जिन्हें महाविद्या कहा जाता है उनमें से एक प्रमुख महाविद्या है बगलामुखी महाविद्या । इस कहानी में मैं आपको बगलामुखी साधना के कुछ अनुभव साझा कर रहा हूं .....
यह उन दिनों की बात है जब मेरी उम्र लगभग 20 साल रही होगी । मेरा एक गुरु भाई था जिसका नाम था गजानंद । उसकी दो चचेरी बहने थी । एक का नाम था विद्या और दूसरे का नाम था आशा । हम चारों लगभग हम उम्र के थे और सभी को मंत्र साधना में रुचि भी थी ....
इसलिए हमारी अच्छी जमती थी ।

विद्या हम चारों मे सबसे बोल्ड थी और समझदार भी । इसकी वजह शायद जीवन में उसका कम उम्र में बहुत सारे अनुभव से गुजरना भी हो सकता है । उस समय उसकी उम्र लगभग 22-23 साल रही होगी ।
विद्या के पिता बचपन मे ही गुजर गए थे । माँ नौकरी पर जाती थी । उसके पड़ोसी युवक ने इसका फायदा उठाया । उसे अपने झांसे मे लेकर उससे संबंध बना

लिए । वह युवक उससे 12 साल बड़ा था । जब वह 16 साल की थी तभी वह प्रेग्नेंट हो गयी । काफी बवाल मचा और उस युवक ने उससे शादी कर ली । उसकी एक बेटी हुई । जो उस समय 5-6 साल की थी ।

प्रेम विवाह में आमतौर पर शारीरिक आकर्षण काम करता है । जैसे-जैसे प्रेमी प्रेमिका एक दूसरे के स्वभाव को और उनकी वास्तविकता को पहचानने लगते हैं तब उनका स्वप्नलोक टूट जाता है । उसके बाद तकरार चालू हो जाती है । विद्या के साथ भी कुछ कुछ ऐसा ही हुआ ।

साल भर बाद उसे धीरे-धीरे पता चला कि उस युवक के और भी महिलाओं के साथ संबंध है । दोनों के बीच झगड़ा होने लगा और विद्या की पिटाई भी चालू हो गई । कुछ दिनों में उसने घर में पैसा देना भी बंद कर दिया ...
कई दिन ऐसे होते जब विद्या अपनी बिटिया को दूध भी नहीं पिला पाती ...

इसलिए आखिर में विद्या ने नौकरी करने की सोची ।
विद्या काफी मेहनती और स्मार्ट लड़की थी । इसलिए उसे आसानी से नौकरी भी मिल गयी । अब उसका पति उसके पैसे भी छीनने लगा ।

जब सहन शक्ति से बाहर हो गया तो वह उसे छोड़कर वापस अपनी मां के घर आ गई । यह सब बर्दाश्त न कर पाने के कारण उसकी मां छह महीने में चल बसी ।

विद्या अपनी छोटी बच्ची के साथ इस बड़े संसार में अकेली रह गई ।
नातेदार रिश्तेदार भी ऐसी स्थिति में साथ नहीं देते और विद्या के साथ भी ऐसा ही हुआ ।
जब परेशानी आ जाए तो हमारे यहां सुझाव देने वाले और गलती बताने वाले बहुत लोग मिल जाते हैं ।
लेकिन मदद करने के लिए कोई भी आगे नहीं आता ।
यहां तक कि रिश्तेदार भी नहीं । सबके मन में यही भाव रहता है कि "फालतू झंझट कौन मोल ले... "

आप खुद सोचें ....
केवल 18 साल की लड़की !

एक बच्ची की मां !
इस शानदार संसार में अकेली रह गई ।
जब कोई लड़की या औरत अकेली हो जाती है तो समाज के सारे पुरुष उसमें संभावनाएं खोजने लगते हैं । जब वह जवान हो और सुंदर हो तो इस प्रकार की खोजी प्रवृत्ति वाले पुरुष बहुत ज्यादा प्रयास करते हैं । कई तरह से लुभाने और परेशान करने की कोशिश करते हैं । यह सब विद्या के साथ भी हुआ ....

विद्या जिद्दी थी और समझदार भी । परिस्थितियों पर रोकर उसने अपना समय नहीं गंवाया और उसका सामना करने के लिए तत्पर हो गई । धीरे धीरे उसने अपने आप को और बच्ची को संभाल दिया ।

उसकी छवि एक दबंग युवती की हो चुकी थी । जब वह गुस्से में आती तो सामने वाले की फिर खैर नहीं होती थी । वह पहली लड़की थी जिसके मुंह से मैंने फर्राटेदार मां बहन की गालियां सुनी थी ।
वह जिस पर गुस्सा हो जाती तो उसे अपनी बातों और गालियों से ऐसा नवाजती थी कि सामने वाले को ऐसा लगता कि उसे भरे चौक में नंगा कर दिया गया हो ।

उसकी इस इमेज के चलते धीरे-धीरे लोगों ने उसे परेशान करना भी छोड़ दिया ।
वे जानते थे कि उसे परेशान करने का मतलब मधुमक्खी के छत्ते में हाथ डालने के जैसा है ...

मेरा मित्र गजानंद एक विद्वान किस्म का प्राणी था । आप लोगों ने भी देखा होगा कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो दूसरों को बहुत सारी बातें बताते हैं और इससे उनको फायदा भी होता है । गजानंद उसी प्रकार का प्राणी था । उसके पिता भी बैगा का काम अर्थात झाड फूँक करते थे । इसलिए उसे मंत्र और साधना के विषय में काफी जानकारियां थी । इसके अलावा उसे थोड़ा बहुत ज्योतिष का भी ज्ञान था।

उसने विद्या को उसकी समस्या के दौरान कुछ मंत्र और उपाय भी बता कर दिए थे । जिसके बाद उसे लाभ हुआ था । परेशानी के उस दौर में गजानंद परिवार से तो नहीं लड़ पाता था, लेकिन उसने हमेशा विद्या की मदद करने की हरसंभव कोशिश की । इसलिए विद्या उसे बहुत मानती थी और उसकी सलाह को मानकर मंत्र जाप या उपाय करती रहती थी ।

एक बार गजानन्द को किसी किताब से बगलामुखी साधना के विषय में पता चला । उसे वह बड़ा आकर्षक लगा, गजानंद ने इसके विषय में विद्या को भी बताया । वह भी तैयार हो गई । गजानन्द और विद्या ने देवी बगलामुखी का मंत्र जाप करना चालू कर दिया ।

शुरु के तीन चार दिन तक सब कुछ ठीक चलता रहा । लेकिन पांचवें दिन अचानक विद्या को मार पड़नी चालू हो गई । उसे ऐसा लगता था जैसे कोई उसे डंडे से मार रहा है । जैसे ही वह मंत्र जाप चालू करती ... डंडे की मार भी चालू हो जाती....

गजानंद उसके बगल में बैठा था लेकिन उसे कुछ भी पता नहीं चला । आखिरकार उसने मंत्र जाप छोड़ दिया और सो गई । गजानंद उस रात भी अपना मंत्र जाप पूरा करके सोया ।

अगले दिन हम जब साथ बैठे थे तो उसने हमसे यह बात कही । हमने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया तो उसने कहा - चलो फिर हमारे साथ आज रात को तुम भी बैठकर साधना करो ।

तो यह तय हुआ कि हम चारों एक साथ बैठकर साधना करेंगे । विद्या के घर में छत में एक कमरा था । जो इतना बड़ा था कि उसमें चार लोग लाइन से बैठ सकते थे । सामने दीवाल पर ही आले बने हुए थे जिसमें सामान रखते हैं । उसी मे वे दोनों मंत्र जाप करते थे । उस रात मैं, गजानन्द , आशा और विद्या चारों बैठे ।

हम लोगों ने सामने देवी बगलामुखी की फोटो को उस किताब से फोटो कॉपी किया और उसे आले मे रख दिया था । उसके बाद मंत्र जाप करने बैठे । बगलामुखी का जो सर्वमान्य मंत्र है वह काफी बड़ा है । जिसे तुरंत याद नहीं किया जा सकता । इसलिए चारों के सामने कागज में देवी बगलामुखी का जो मूल मंत्र है वह लिखकर गजानन्द ने रख दिया था ।
महाविद्या बगलामुखी मंत्र था :-
॥ ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानाम वाचम मुखम पदम स्तंभय जिह्वाम कीलय बुद्धिम विनाशय ह्लीं फट स्वाहा ॥

हम चारों ने लगभग रात के 10 बजे मंत्र जाप प्रारम्भ किया । एक घंटे तक सब ठीक-ठाक रहा 11:30 बजे

के आसपास अचानक हम लोगों ने देखा कि विद्या दोनों हाथ कंधे के पास रख कर अपने आप को बचाने की कोशिश कर रही है ।

उसके द्वारा जैसी हरकतें की जा रही थी वह बिलकुल वैसी थी, जैसे... अगर आपको डंडे से मार पड़ रही हो, और आप अपने हाथों से उस डंडे को रोकने की कोशिश करते हैं , तब होती है ।

ठीक वही मुद्रा ।
हम तीनों को कुछ भी नहीं हो रहा था । विद्या नटखट भी थी तो हम लोगों ने सोचा कि वह नाटक कर रही है ।

हम लोगों ने 11 माला जाप करने का सोचा था । लेकिन विद्या लगभग 6 या 7 माला करके उठ कर चली गई । हम तीनों को कोई अनुभव नहीं हुआ न किसी प्रकार की मार पड़ी । हम आखिर तक यही सोचते रहे कि विद्या हमें बेवकूफ बना रही है ।

लेकिन सच्चाई वही थी ...
जो विद्या हमें बता रही थी ।

इसका खुलासा तब हुआ जब अगले दिन उसने अपने हाथ दिखाए ।
उसके दोनों हाथों में कंधे से लेकर कोहनी तक डंडे की मार के कम से कम 10-15 निशान मौजूद थे , जो लाल पड़ गए थे । उसे देख कर हमें यह विश्वास करना पड़ा कि वास्तव में उसे मार पड़ती है ।

हम तीनों में से किसी को भी उस कमरे में कोई भी दिखाई नहीं दिया था । हां । विद्या की मुद्रा यह बता रही थी कि उसे मार पड़ रही है, इसके अलावा कुछ भी आभास नहीं हुआ ।
ऐसा विचित्र था ....
भगवती बगलामुखी की साधना का पहला अनुभव ...

बाद में जब वरिष्ठ गुरु भाइयों से इस संबंध में चर्चा हुई तब पता चला कि यदि कोई बिना गुरु की अनुमति के बगलामुखी साधना करें तो कभी-कभी इस प्रकार के अनुभव हो जाते हैं ।

कालांतर में विद्या ने गुरु से दीक्षा भी ली और कई साधनाएं भी की ....

बगलामुखी साधना के दौरान देवी अलग-अलग प्रकार से अपने साधक का परीक्षण करती है । कुछ साधकों को बहुत जटिल परीक्षण से गुजरना पड़ता है और कुछ साधकों को सामान्य परीक्षण से गुजरना पड़ता है । संभवतः विद्या जटिल परीक्षण से गुजरी होगी इसलिए उसको इस प्रकार के अनुभव होते थे ।

महाविद्या साधनाओं में जटिल माने जाने वाली साधना में से एक है बगलामुखी देवी ।
इन्हें मूल रूप से स्तंभन की देवी माना जाता है ।
"स्तंभन" का मतलब होता है किसी चीज को रोक देना या उसकी गति को बाधित कर देना । ऐसा कहा जाता है कि जो बगलामुखी के सिद्ध साधक होते हैं वह पवन और तूफान की गति को भी रोक सकते हैं ।

इसके अलावा शत्रु संहार में भी देवी पीतांबरा बगलामुखी को सबसे ज्यादा प्रभावशाली माना जाता है । मां पीतांबरा को राजसत्ता की देवी माना जाता है। इसी रूप में भक्त उनकी आराधना करते हैं। इसी के चलते अधिकांश राजनेता अपने चुनाव या किसी विशेष अभियान के दौरान बगलामुखी की साधना करने

और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने उनका अनुष्ठान करने के लिए मध्यप्रदेश में दतिया में स्थित विश्व प्रसिद्ध महाविद्या बगलामुखी के पीतांबरा शक्तिपीठ में अवश्य जाते हैं .....

दतिया का पीतांबरा शक्तिपीठ

दतिया में भगवती बगलामुखी का सिद्ध पीठ स्थापित है । पीताम्बरा पीठ की स्थापना एक सिद्ध संत, जिन्हें लोग 'स्वामीजी महाराज' कहकर पुकारते थे, दतिया के राजा शत्रुजीत सिंह बुन्देला के सहयोग से की थी।

एक रोचक बात यह है कि कभी इस स्थान पर श्मशान हुआ करता था । इस वजह से यह स्थान बेहद जागृत और चैतन्य है ।

आश्रम में घुसते ही भगवती पीतांबरा पीठ स्थापित है । थोड़ा अंदर जाने के बाद स्वामी जी महाराज के द्वारा स्थापित महाविद्या धूमावती देवी मंदिर है ।
महाविद्या धूमावती तंत्र जगत की एक गोपनीय महाविद्या है जिसके साधक नहीं के बराबर है ।
उनके मंदिरों की संख्या भी गिनती की होगी और इनमें से संभवतः सबसे पहला मंदिर यही है । भगवती मां धूमावती के विग्रह , पूजन और साधना पद्धति तीनों को बेहद गोपनीय रखा जाता है और यह केवल साधकों के

और उच्च स्तर के साधकों के लिए ही करने योग्य मानी जाती है ।

इनका स्वरूप बेहद उग्र है ! साधना के दौरान किसी प्रकार की न्यूनता वह बर्दाश्त नहीं करती है और तुरंत दंड देती है । इसीलिए यहाँ भी मां धूमावती के दर्शन का सौभाग्य केवल आरती के समय ही प्राप्त होता है, बाकी समय मंदिर के कपाट बंद रहते हैं। मां धूमावती को प्याज के भजियों का भोग लगता है । इसके अलावा, आश्रम में परशुराम, हनुमान, कालभैरव और अन्य देवी-देवताओं के मंदिर भी हैं।

देवी बगलामुखी का सिद्ध पीठ होने के नाते यहां पर विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान चलते रहते हैं । हाल बने हुए हैं जिसमें बैठकर साधक मंत्र जाप कर सकते हैं ।

यहां पर एक विशेष यज्ञ कुंड भी बना हुआ है । जिसके विषय में कहा जाता है कि भारत और चीन के बीच हुए युद्ध के दौरान यहां पर एक विशेष अनुष्ठान किया गया था ।

भारत और पाकिस्तान के बीच में तनाव का माहौल शुरु से रहा है और उनके बीच में तनातनी और युद्ध की स्थिति हमेशा से मौजूद रही ।

भारत को 1947 में आजादी मिली और 1949 में चीन जिसे पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) बना । प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी ने चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए कोशिश की । उन्होने चीन के साथ हुए पंचशील समझौते के तहत तिब्बत में चीन शासन के कब्जे को भी स्वीकार किया । उसी समय प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का नारा दिया था । लेकिन हिंदी चीनी भाई भाई जैसे नारों से भी कुछ नहीं हुआ । नेहरू जी खुशफहमी मे थे कि युद्ध नहीं होगा इसलिए भारत ने सैनिकों की सिर्फ दो टुकड़ियों को तैनात किया , जबकि चीन की वहां तीन रेजिमेंट्स तैनात थीं। इन सब परिस्थितियों के बीच 20 अक्तूबर सन् 1962 में चीन की पीपुल्स लिब्रेशन आर्मी ने लद्दाख पर और नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी (नेफा) में मैकमोहन लाइन के पार हमला कर दिया ।

युद्ध प्रारम्भ हो गया ।
सैनिक क्षमता में हम चीन से काफी पीछे थे इसलिए हमारी स्थिति लगातार गंभीर होती जा रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे हम वह युद्ध हार जाएंगे । हमारी सेना को अलग-अलग मोर्चों पर कड़ी मार झेलनी पड़ रही थी । जिसके चलते सेना का मनोबल भी कमजोर पड़ता जा रहा था । यह परिस्थिति देश के लिए बेहद घातक हो सकती थी ।

आप लोग जानते होंगे कि चीन एक कम्युनिस्ट देश है । भारत के सबसे प्रमुख हितेषी माने जाने वाले सोवियत रूस में भी कम्युनिस्ट विचारधारा ही स्वीकार की जाती थी । इस विचारधारा के चलते भारत के मित्र सोवियत यूनियन ने अपना रुख बदलते हुए चीन का समर्थन कर दिया था और कहा था कि मैकमोहन लाइन ब्रिटिश साम्राज्यवाद का खतरनाक परिणाम है।

इससे भारत की स्थिति काफी मुश्किल हो चुकी थी और इस युद्ध का परिणाम क्या होगा यह चिंता सभी को खाए जा रही थी ।

ऐसा कहा जाता है कि तभी किसी योगी ने पंडित जवाहर लाल नेहरू से स्वामी महाराज से मिलने को कहा । उस समय नेहरू दतिया आए और स्वामीजी से मिले । स्वामी महाराज ने राष्ट्रहित में एक 51 कुंडीय महायज्ञ करने की बात कही।
यज्ञ में सिद्ध पंडितों, तांत्रिकों व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को यज्ञ का यजमान बनाकर यज्ञ प्रारंभ किया गया।

भगवती महाविद्या बगलामुखी की कृपा से यज्ञ के नौंवे दिन 'संयुक्त राष्ट्र संघ' का नेहरू जी को संदेश मिला कि चीन ने आक्रमण रोक दिया है ।
चीन ने युद्ध क्यों रोका ?
इसका कोई भी स्पष्ट कारण आज तक कोई भी न जान पाया है और ना ही बता पाया है ।
ग्यारहवें दिन अंतिम आहुति के साथ ही चीन ने अपनी सेनाएं वापस बुला ली थीं ।

इसके पीछे क्या रहस्य था ?
अचानक यह युद्ध क्यों रुका ?
चीन ने अपनी सेनाएं क्यों वापस बुलाई ?

यह अपने आप में एक अद्भुत अविश्वसनीय और रहस्यमय घटना थी ।
उसके पीछे स्वामी जी महाराज के द्वारा किया गया अनुष्ठान माना जाता है ॥
भगवती महाविद्या बगलामुखी के शत्रु स्तंभन का यह सबसे विराट और अद्भुत प्रमाण था !
जिसकी दुनिया साक्षी थी .....
इस पर अधिक जानकारी आप गूगल करके देख सकते हैं ।
जिस यज्ञशाला का इस आयोजन में उपयोग किया गया था मन्दिर प्रांगण में वह यज्ञशाला आज भी बनी हुई है।

जब भी देश पर किसी भी प्रकार का बाहरी या आंतरिक संकट आया है तब तब इस शक्तिपीठ पर अनुष्ठान किए जाते रहे हैं । उनमे से अधिकांश परिस्थितियों से हम सुरक्षित रूप से बाहर निकल आए ।
कहा जाता है कि इसी प्रकार सन् 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भी यहाँ गुप्त रूप से अनुष्ठान एवं यज्ञ करायें गये थे।

सन् 2000 में कारगिल में भारत-पाकिस्तान के बीच पुनः युद्ध हुआ, किंतु हमारे देश के कुछ विशिष्ट साधकों ने मां बगलामुखी की गुप्त रूप से पुनः साधनाएं एवं यज्ञ किए थे जिससे दुश्मनों को मुंह की खानी पड़ी । ऐसा कहा जाता है कि यह यज्ञ तात्कालीन प्रधानमंत्री अटल बीहारी वाजपेयी के कहने पर यहां कराया गया था ।

ऐसी अद्भुत महाविद्या के ऊपर आधारित एक कहानी लिखने का विचार .....
काफी दिनों से मन में था .....
लेकिन कुछ भी स्पष्ट नहीं हो रहा था कि क्या लिखूं ?

किसी भी दैवीय शक्ति के बारे में तभी लिखा जा सकता है जब उनकी इच्छा हो ।
यह बात मैं अच्छी तरह से जानता था !
इसलिए मैंने जबरदस्ती कुछ भी लिखने का प्रयास नहीं किया और इंतजार करता रहा कि भगवती की इच्छा होगी तो वह अवश्य कुछ न कुछ संकेत करेंगी ।

वास्तव में ऐसा ही हुआ !

एक दिन एक पाठिका ने मुझे लिखा कि वह बगलामुखी साधना से संबंधित कुछ अनुभव मुझसे शेयर करना चाहती हैं ।

तब मुझे आभास हुआ कि संभवत: माई कुछ लिखवाना चाहती होगी .....

उन्होंने इस संबंध में कुछ नहीं बताया था कि ऐसा क्या अनुभव वह मुझसे शेयर करना चाहती हैं ।

फिर काफी दिनों तक उनका कोई मैसेज नहीं आया .....

तो मुझे लगा कि मामला ठंडे बस्ते में चला गया ....

महामाया की इच्छा

मुझे लगा महामाया की इच्छा नहीं है ...
ऐसा सोचकर मैं भी दूसरी कहानी पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहा था ....
वह 23 अप्रैल गुरुवार का दिन था ....

मैं अपने सामान्य कामकाज निपटा कर टीवी वगैरह देखकर सोने के लिए जा रहा था । जैसा कि हम आमतौर पर करते हैं सोने से पहले व्हाट्सएप चेक किया ....

एक अनजान नंबर से 5 या 6 फोटो आए हुए थे । मैंने उत्सुकता वश उनको खोलकर देखा । मेरी उस पाठिका ने पूरे 6 पेज में अपने साथ घटी हुई घटना का पूरा विवरण लिख कर भेजा था । मैंने उसे पढ़ना चालू किया और जब तक पूरे के पूरे 6 पेज मैंने पढ़ नही लिए....
तब तक मुझे शांति नहीं मिली ....
रात के 12:30 बज चुके थे ....

अर्ध रात्रि का समय भगवती के जागरण का समय माना जाता है ।
उसी समय उनके द्वारा प्राप्त हुए उस विवरण को आधार बनाकर मैं एक कथानक आप लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहा हूं ।

कथा में मनोरंजन को बनाए रखने के लिए मैंने अपनी तरफ से कुछ काल्पनिक पात्र और प्रसंग भी जोड़े हैं । इसलिए आप इस पूरी कथा को काल्पनिक ही माने और उस का आनंद लें ....

मृदुला

इस कहानी की नायिका है मृदुला ।
मृदुला गोडबोले ॥
मृदुला अपने नाम की ही तरह बेहद मृदुल अर्थात मितभाषी ।
मृदुला अपने मां-बाप की इकलौती बेटी थी । एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी मृदुला के पिताजी छत्तीसगढ़ के राजनाँदगाँव मे प्राइमरी स्कूल में टीचर थे । धर्म परायण माता-पिता की संतान होने के नाते देवी देवताओं में विश्वास संस्कार में मिले थे ।

मृदुला लगभग 5 फीट ऊंची गोरी और बेहद तीखे नैन नक्श वाली सुंदर युवती थी ।
अधिकांश सुंदर युवतियों में अहंकार भी बराबर देखा जाता है लेकिन मृदुला इसका अपवाद थी ।
वह जितनी देह से सुंदर थी ....
उतनी ही दिल की भी सुंदर थी .....

ग्रेजुएशन होते होते उसके लिए रिश्ते आने लगे और फाइनल ईयर में उसकी शादी तय हो गई । लड़के का

नाम था । सदानंद गोडबोले । वह रजिस्ट्रार ऑफिस में बाबू की पोस्ट पर तैनात था । सरकारी नौकरी वाला सुदर्शन दामाद मिलना बड़े सौभाग्य की बात थी ।

मृदुला के घर वाले भी बेहद खुश थे । प्राइमरी स्कूल के टीचर की हैसियत आप समझ ही सकते हैं । उन्होंने अपने पास जमा पूंजी जो भी रखी थी वह सब कुछ इस शादी में खर्च कर दी ।

उसके माता-पिता खुशी से फूले नहीं समा रहे थे क्योंकि आज के युग में अगर सरकारी नौकरी वाला दामाद मिल जाए तो लड़की के माता-पिता को ऐसा लगता है जैसे लॉटरी लग गई हो । कुछ कुछ ऐसा ही मृदुला के माता-पिता के साथ भी था ....

पति सदानंद भी अच्छे आदमी थे और मृदुला का पूरा ख्याल रखते । गृहस्थ जीवन आनंद के साथ आगे बढ़ता रहा । इस दौरान उनको एक बेटा भी हुआ । जो अब लगभग सवा साल का था । मृदुला बेहद खुश थी । दोनों की जिंदगी बेहद सुगमता से कट रही थी ।

रजिस्ट्रार ऑफिस में जमीन मकान आदि की रजिस्ट्री का काम होता है । इस काम में काफी संभावनाएं मौजूद रहती है । यानी ऊपरी कमाई वाला विभाग है ।

सदानंद ईमानदार आदमी थे, लेकिन व्यवस्था जब पूरी भ्रष्ट हो तो अकेला आदमी उसमें बहुत ज्यादा परिवर्तन नहीं ला सकता है । इसलिए वह किसी भी प्रकार के लेनदेन को स्वीकार नहीं करते लेकिन सालों से चली आ रही परंपरा को रोक भी नहीं पा रहे थे ।

हाँ ! अपने स्तर पर वे कोशिश जरूर करते....
पैसा एक ऐसी चीज है जिसकी आदत लग जाए तो वह बड़ी मुश्किल से छूटती है । इसकी वजह से पुराने ढर्रे में कोई बहुत ज्यादा सुधार वह नहीं ला पाए थे ।
ऑफिस अपनी गति से अपने पुराने नियमों के आधार पर चल रहा था ।

इस प्रसाद का उन्होने भरपूर उपयोग किया था । शहर के बाहर उनका एक 3 एकड़ का छोटा सा फार्म हाउस था । शहर के अंदर मेन मार्केट में सिर्फ दो दुकानें थीं , जो किराए पर चढ़ी हुई थी । इसके अलावा भगवान की दया से सिर्फ चार सुमो किराए पर चलते थे ।

उनका आवारा बेटा मोहन प्रसाद शहर के बाहर बने हुए फार्म हाउस में रहता था ।
फार्म हाउस के चारों तरफ 15-15 फीट ऊंची दीवाल थी !
अंदर क्या हो रहा है ? यह बाहर से किसी को पता नहीं चल सकता था ।
इकलौते गेट पर हमेशा दो हथियारबंद गार्ड का पहरा रहता था ।
वह प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करता था ...
बाकी आप खुद समझ गए होंगे ....

उसके फार्म हाउस आने वालों में बड़े-बड़े उद्योगपतियों से लेकर पुलिस और प्रशासन के अधिकारी भी शामिल थे । जिनकी वहां सभी प्रकार की मौज मस्ती की व्यवस्था की जाती थी । इन सबके चलते मोहन प्रसाद

अपने आपको किसी राजा से कम नहीं समझता था ।

किसी विभाग का कोई भी काम निपटाना उसके लिए बहुत आसान सा था । इसलिए सभी लोग अपनी अपनी समस्या लेकर उसके दरबार में हाजिर होते थे और पर्याप्त शुल्क देकर अपनी समस्या का समाधान प्राप्त करते थे । धीरे-धीरे वह भैया जी के नाम से मशहूर हो चुका था । कुल मिलाकर काफी लंबा-चौड़ा मायाजाल फैला हुआ था !

जितना लंबा चौड़ा मायाजाल कामता प्रसाद जी का था । उतने ही उनके लंबे चौड़े लिंक भी थे । राजनीति से लेकर सरकारी अफसरों तक सभी जगह वे अपनी पकड़ रखते थे । यानी कुल मिलाकर बेहद चलते पुर्जे आदमी ।

पिछले 25 साल से वह रायपुर में ही बैठे हुए थे । इस दौरान वे चपरासी से बढ़ते बढ़ते बड़े बाबू बन गए, लेकिन मजाल है जो कोई उनका ऑफिस बदल दे । इसी से आप उनकी जुगाड़ क्षमता का अंदाजा लगा सकते हैं । जबकि रायपुर राजधानी होने के नाते सबसे ज्यादा संभावनाओं वाला ऑफिस है ।

सरकारें बदली ,

नेता बदले,

पार्टियाँ बदली,

अफ़सर बदले !

पर ! कामता प्रसाद अंगद के पाँव की तरह जमे हुए थे ....

सदानंद की किसी बात पर कामता प्रसाद के साथ अनबन हो गई । कामता प्रसाद किसी बात को हल्के में नहीं लेते थे और बदला भाँजने का कोई मौका छोड़ते भी नहीं थे ।

अब वह मौके की तलाश में लग गए ।

सरकारें बदली ,

नेता बदले,

पार्टियाँ बदली,

अफ़सर बदले !

पर ! कामता प्रसाद अंगद के पाँव की तरह जमे हुए थे ....

सदानंद की किसी बात पर कामता प्रसाद के साथ अनबन हो गई । कामता प्रसाद किसी बात को हल्के में नहीं लेते थे और बदला भाँजने का कोई मौका छोड़ते भी नहीं थे ।

अब वह मौके की तलाश में लग गए ।

फर्जी रजिस्ट्री और जेल

कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई व्यक्ति जिसके नाम से जमीन होती है उसकी जगह पर किसी दूसरे व्यक्ति को खड़ा करके जमीन को बेच दिया जाता है । ऐसे फर्जीवाड़े के प्रकरण आप लोगों ने अखबारों में अवश्य पढ़े होंगे ।

छत्तीसगढ़ के अभनपुर नाम के गांव का एक किसान था बनवारी । बनवारी तीर्थ यात्रा पर गया हुआ था । उसकी जगह पर मोहन प्रसाद ने अपने आदमी को खड़ा करके उस जमीन का लेन-देन करवा दिया ।
इस घटना को हुए लगभग 6 महीने बीत चुके थे ।
बनवारी के वापस लौटने पर उसे इसकी जानकारी हुई और उसने मुख्यमंत्री के कार्यालय में इसकी शिकायत दर्ज करवा दी ।
पेपरबाजी भी हुई ।
कुल मिलाकर मामला कामता प्रसाद के हाथ से निकल गया ...
मुख्यमंत्री ने तुरंत संज्ञान लेते हुए इस पर कार्यवाही की टिप्पणी के साथ संबंधित थाने को भेज दिया ।

मुख्यमंत्री कार्यालय से पत्र आने का प्रभाव तुरंत सामने आया । झटपट झटपट कार्यवाही हुई ।

सदानंद को भी कामता प्रसाद ने इस लपेटे में ले लिया । पुलिस मोहन प्रसाद के साथ साथ सदानंद को भी गिरफ्तार करके ले गई ।

उस समय मृदुला अपने मायके गई हुई थी । उसे फोन के द्वारा खबर मिली । उसने अपने माता-पिता को कुछ भी नहीं बताया और अगली ट्रेन पकड़ कर रायपुर आ गई ।

जिस जज की अदालत में वह केस दर्ज हुआ । वह अपने आप में बेहद खूंखार माना जाता था । उसे सरकारी अधिकारी द्वारा घूस लेने की घटना का पता चलते ही आग लग जाती थी और फिर वह सबसे कठिन सजा उसे सुनाता था ।

मृदुला ने अपनी तरफ से प्रयास किया !
अपने डेढ़ साल के बच्चे को गोद में उठाए उस ने बहुत भागदौड़ की ।

अच्छे वकील को ढूंढा । लेकिन उसका प्रयास निष्फल रहा ।
जज ने सदानंद को जेल भेज दिया । उसकी जमानत नहीं हो पाई ।

जेल के अंदर का जीवन आप लोगों ने फिल्म में जरूर देखा होगा ।
वहां एक समानांतर सत्ता चलती है, जो अपराधियों की होती है ।
जैसे कॉलेज और स्कूल में रैगिंग होती है ठीक वैसे ही जेल के अंदर भी नए अपराधियों को इस रैगिंग से होकर गुजरना पड़ता है । सदानंद को भी गुजरना पड़ा.....

सदानंद के लिए वह मृत्यु से कम नहीं था ।

जीवन भर उसने इमानदारी और सत्य के मार्ग पर चलने की कोशिश की लेकिन परिणाम बेहद भयावह और दुखद मिला ।

जेल का नारकीय जीवन और सदानंद

वह अपनी स्थिति पर बेहद दुखी चिंतित और अवसाद ग्रस्त था ।
उसकी आंखों के नीचे काले गड्ढे पड़ गए ।
रातों की नींद गायब हो गई ।
मृदुला और बच्चे की चिंता उसे खाए जा रही थी ।

मृदुला जब पहली बार जेल में उससे मिलने गई तो उसकी हालत देखकर रो पड़ी ।
सदानंद को देखकर ऐसा लग रहा था , जैसे सालों से बीमार हो ।

गोरा चिट्टा सदानंद !
हट्टा कट्टा सदानंद !!
पहचान में ही नहीं आ रहा था .....

महीने भर की जेल ने उसे बेदम !
बेहाल !!
और बदसूरत बना दिया था ।

सदानंद ने मृदुला को ढांढस बनाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह खुद अंदर से इतना टूटा हुआ था कि कुछ समय के बाद वह फफक फफक कर रो पड़ा ।
उसे रोता देखकर नन्हा बालक भी मृदुला के साथ रोने लगा ।

मृदुला ने अपने आप को संभाला और साथ ही सदानंद को ढांढस बंधाया कहा - तुम चिंता मत करो । मैं जितनी जल्दी हो सके जमानत करवाने की पूरी कोशिश करूंगी । जब तुमने गलती नहीं की है तो तुम बाहर निकल ही आओगे । हिम्मत बनाए रखो तुम्हें कुछ नहीं होगा ...
काफी देर रोना गाना चलता रहा ...
उसके बाद मृदुला वापस लौट आई ।

वह मृदुला , जो घर और स्कूल कॉलेज की दीवारों के अलावा कहीं किसी प्रकार की जरूरत में नहीं जाती थी ।
सब काम पहले उसके पिताजी करके देते थे बाद मे सदानंद !

वह समाज और दुनिया की सच्चाई से रुबरु हो रही थी । उसने लगातार वकील के चक्कर काटे । सभी प्रकार के संभावनाओं को तलाशते हुए उसका समय कट रहा था । इस बीच लगभग 2 महीने गुजर चुके थे ।

मंत्र जाप और सदानंद की ताजगी

मृदुला इस बार जब जेल में सदानंद से मिलने गई तो सदानंद के चेहरे पर थोड़ी सी ताजगी दिख रही थी । मृदुला को अच्छा लगा !
उसने उत्साह बढ़ाने के लिए सदानंद को पूछा - आप तो अच्छे लग रहे हो ! क्या बात है ?
सदानंद ने बताया - मेरे कमरे में एक नया कैदी सुखनंदन आया है । वह भी मेरी ही तरह झूठे केस में फंसा हुआ है । वह रात को बैठकर कुछ मंत्र जाप करता रहता था । एक-दो दिन तो मैंने देख कर उसे ध्यान नहीं दिया, लेकिन फिर मुझे ऐसा लगा कि पता करना चाहिए ।

मैं पूछा - सुखनंदन ! तुम रात को क्या करते हो ?

सुखनंदन ने शुरु में बात को टालने की कोशिश की । लेकिन मैंने उससे जब दो-तीन बार पूछा तो वह बताने को राजी हुआ ।

सुखनंदन बोला - मैंने प्रसिद्ध तंत्र गुरु डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी की किताब पढ़ी थी । उसमें एक साधना लिखी हुई थी । जिसका नाम था बगलामुखी । मैं वही कर रहा हूं ।

मैंने पूछा - इससे क्या फायदा होगा ?

सुखनंदन बोला - जेल से मुक्ति के लिए, मैं इसका जाप कर रहा हूं ।
मैंने पूछा - क्या वाकई इससे तुम जेल से छूट जाओगे ?

सुखनंदन बोला - सदानंद ! हम अभी जेल में हैं । यहां अंदर बैठकर हम क्या कर सकते हैं । जो हमारे रिश्तेदार बाहर में हैं । वह हमारे रिहाई के लिए , जमानत के लिए, कोशिश कर रहे हैं । जेल के अंदर बैठकर हम तो कुछ भी नहीं कर सकते । ऐसी स्थिति में अगर कोई ऐसा देवी या देवता हो ! जो अदालती केस में मदद कर सकता है ! तो उसकी साधना और मंत्र जाप करने से हो सकता है कि बाहर हमारे रिश्तेदारों को किसी प्रकार की मदद मिल जाए और हमारा काम जल्दी हो जाए ।
यही सोचकर मैं मंत्र जाप कर रहा हूं ।

सदानंद बोला - तुम्हारी बात तो ठीक लग रही है । लेकिन ऐसा कहा जाता है कि मंत्र जाप विधि विधान से ही करना चाहिए वरना नुकसान हो सकता है ।

सुखनंदन बोला - तुम्हारी बात तो सही है , लेकिन वह तो तभी संभव है जब हम बाहर हो । सामान्य परिस्थिति में हो । अभी हम जेल में हैं । यहां पर सभी प्रकार के नियमों का पालन करना तो संभव नहीं है । यहां कोई भी चीज हमारे हिसाब से नहीं होती है । ऐसी स्थिति में मन में श्रद्धा और विश्वास के साथ मंत्र जाप कर रहा हूं । हो सकता है देवी कृपा कर दें और मेरा काम हो जाए ।

सदानंद को उसकी बात में दम नजर आया ।

उसने पूछा - क्या तुम मुझे भी वह मंत्र बताओगे ?

सुखनंदन बोला - तुम्हारी स्थिति भी तो मेरी जैसी ही है । तुम भी करके देखो । हो सकता है लाभ मिल जाए ।

उसके बाद सुखनंदन ने सदानंद को मंत्र बता दिया । मंत्र काफी लंबा था इसलिए उसे याद करने में सदानंद को

भी काफी समय लगा पर एक-दो दिन में उसे याद हो गया । अब दोनों साथ में बैठकर मंत्र जाप करते ।

जब आप खाली बैठे हो तो दुख ज्यादा सताता है ! क्योंकि उस समय आप केवल अपने दुख के बारे में ही सोचते हैं ।
यदि आप कुछ काम करते रहें ! तो ध्यान बंट जाता है !! और दुख की तीक्ष्णता भी कम हो जाती है ।

ऐसा ही कुछ सदानंद के साथ भी हो रहा था । लगभग एक हफ्ते के मंत्र जाप के बाद सदानंद को बहुत अच्छा लगने लगा । एक दिन रात को सदानंद के स्वप्न में एक सफेद धोती कुर्ता पहने हुए व्यक्ति दिखाई दिया ।

सदानंद ने देखा कि वह भी उस व्यक्ति के साथ मौजूद है । वह व्यक्ति उसे आकाश मार्ग से किसी स्थान पर ले गया । वहां पहुंचकर वह व्यक्ति गायब हो गया । सदानंद ने सामने देखा तो लिखा हुआ था पीतांबरा पीठ दतिया । उसके बाद झटके से उसकी नींद खुल गई ।

सुबह दोबारा जब सुखनंदन के साथ बैठने का मौका मिला तो सदानंद ने उसे रात के सपने के बारे में बताया ।

सुखनंदन बोला - दतिया का शक्तिपीठ देवी बगलामुखी का माना हुआ शक्तिपीठ है । उसे पीतांबरा पीठ कहा जाता है । मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हें किसी को पीतांबरा पीठ पर भेजना चाहिए । हो सकता है वहां पूजा पाठ करने से तुमको लाभ हो ।

उसकी बातें सुनकर सदानंद बेहद उत्साहित हुआ । वह बहुत ज्यादा पूजा पाठ करने वाला आदमी नहीं था । सुबह शाम अगरबत्ती लगाने के सिवाय उसने कभी भी कोई विशेष पूजा या मंत्र जाप नहीं किया था । अपने मंत्र जाप से इस प्रकार की अनुभूति उसके उत्साह को दोगुना कर गई । वह दुगने जोश से अपने अनुष्ठान में लग गया ।

एक दिन उसे स्वप्न में देवी के दर्शन भी हुए ।

अब उसे साधना से लगन सी हो गई थी पहले आधा एक घंटा मंत्र जाप करने वाला सदानंद अब दो-दो तीन-तीन घंटे तक बैठकर मंत्र जाप करता था ।
लगभग एक महीने से यही क्रम चल रहा था ।

मृदुला ने जब यह बात सुनी तो उसे आश्चर्य हुआ ।
सदानंद उसे मंदिर तो ले जाता था लेकिन उसकी श्रद्धा बहुत ज्यादा भगवान के प्रति नहीं थी ।

दरअसल हम सनातन धर्म के लोगों में यह एक बहुत बड़ी दिक्कत है । हम जब थोड़ा पढ़ लिख लेते हैं तो बहुत ज्यादा लॉजिक लगाने लग जाते हैं ।
मंदिर में पत्थर की मूर्ति है । उसके सामने सर झुकाने से क्या होगा ?
उपवास रखने से क्या होगा ?
भागवत पाठ करने से क्या होगा ?
दुनिया में कोई देवी-देवता है तो दिखाई क्यों नहीं देता ?
और आज की परिस्थिति में देखें तो ....
देवी देवता होते तो कोरोना क्यों होता?

इतने सारे लोग पूजा पाठ करते हैं फिर भी उनको करोना क्यों हो जाता है ?
इतने सिद्ध साधक हैं वे कोरोना को क्यों नहीं रोक पाये ?
यह सब ढोंग है , मंदिर बनाने के बजाए अस्पताल बनाए जाने चाहिए ?

सबसे आखिरी और सबसे बड़ा लॉजिक .....
आज तक किसी ने भगवान को नहीं देखा इसलिए भगवान नहीं है ।
यह सब पूजा पाठ अनपढ़ लोगों के लिए है !
पढ़े-लिखे बुद्धिमान बुद्धिजीवी लोगों को वैज्ञानिक सोच रखना चाहिए ।
यह ग़लतफ़हमी पाल कर हम अपनी संस्कृति से अपने पूजा पाठ से दूर होते चले जाते हैं ।

जबकि दूसरे धर्म के लोगों में ऐसा नहीं है ।
अगर आप सिखों को देखें तो हर एक सिख !
चाहे वह कितने भी ऊंचे पद पर हो !
गुरुद्वारे में माथा टेकने जरूर जाता है ।
वह यह नहीं सोचता कि वहां माथा टेकने से क्या हो जाएगा ?

हर जैन चाहे वह कितना भी बड़ा व्यापारी हो ?
चाहे वह कितनी भी ऊंची स्थिति में हो ?
जब जैन मुनि आते हैं तो उनके चरण पखारने उनका आशीर्वाद लेने, उनके द्वारा कही गई बातों को सुनने के लिए अवश्य जाता है ?

इसी प्रकार से ईसाई धर्मावलंबी चाहे वह किसी भी देश मे हो , संडे को चर्च जाना नहीं भूलते ।
यहां तक कि हमारे तथाकथित वैज्ञानिक देश जैसे अमेरिका के लोग भी हर संडे चर्च जाते हैं । क्रिसमस मनाते हैं ।

मुस्लिम धर्म के अनुयाई भी इसी प्रकार अपनी धार्मिक मान्यताओं को पूरी तरह से अपनाते हैं । शुक्रवार के दिन वे मस्जिद में जाना नहीं भूलते । अपनी नमाज पढ़ना नहीं भूलते ....

अपने धर्म के प्रति और उसकी मान्यताओं के प्रति जो विश्वास अन्य धर्मों में मुझे दिखाई देता है वह सनातन धर्म या हिंदू धर्म में बहुत कम दिखाई देता है ।

हम दरअसल बेहद आलसी और कामचोर किस्म की मानसिकता के ग़ुलाम हो चुके हैं ।
हम ना तो किसी प्रकार का पूजा पाठ करना चाहते हैं !
ना ही किसी प्रकार की मंत्र साधना करना चाहते हैं ।
लेकिन .....
अपेक्षा करते हैं कि चमत्कार होता रहे ।

मूर्तियों के दूध पीने की अफ़वाह के बाद मंदिरों में जिस किस्म की लाइन लगती है, वह यह बताने के लिए पर्याप्त है कि हमें पूजा करने से ज्यादा चमत्कार देखने में दिलचस्पी है ।

एक और बात !
सनातन धर्म यह मानता है कि मृत्यु एक स्वाभाविक प्रक्रिया है ।
जिस घर में मृत्यु होती है ! वहां पर हम सूतक लगना मानते हैं और पूजा पाठ नहीं करते हैं ।
शव को जितना जल्दी हो सके उसके अंतिम संस्कार करने के लिए अपने घर से दूर ले जाते हैं । श्मशान में जाने की परंपरा सनातन धर्म में कभी नहीं रही ।

हिंदू धर्म यह मानता है कि जहां पर मृत शरीर होता है वहां सूक्ष्म शक्तियों का स्थान होता है और ऐसे स्थान पर नहीं जाना चाहिए ! विशेष रूप से बच्चों को और महिलाओं को ।
इसी कारण से महिलाओं और बच्चों को श्मशान में ले जाने का प्रावधान नहीं रखा गया है और कोशिश की जाती है कि वह श्मशान न जाएं ।

लेकिन ....
हम चमत्कार और कृपा की लालसा के साथ मज़ार में चले जाते हैं । क्योंकि वहां सिर्फ दर्शन करना होता है । अपनी तरफ से कोई मेहनत नहीं करनी होती ।
तो हम सोचते हैं कि खाली जाकर माथा टेक लेने से अगर काम हो जाता है तो क्या बुरा है ?

खैर ...

सदानंद भी इसी प्रकार की मानसिकता का व्यक्ति था । जेल जाने के बाद लगातार मंत्र जाप और अनुभव ने उसे धीरे-धीरे ईश्वर के अस्तित्व का एहसास करा दिया था । उसे विश्वास होने लगा था कि देवी बगलामुखी उसकी

दतिया पीठ की यात्रा

सदानंद से देवी के संबंध मे सारी बातें सुनकर मृदुला ने दतिया शक्तिपीठ में जा कर पूजा पाठ करने का मन बना लिया । उसने इसके संबंध में जानकारियां इकट्ठा करनी चालू की ।

उसे पता चला कि वहां पर इस प्रकार के अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं । जिसके लिए पंडे तथा पुजारी वहां पर है । जो मनोकामना पूर्ति के लिए अनुष्ठान करते हैं ।

स्त्रियों को आमतौर पर कमजोर माना जाता है ! लेकिन मैंने देखा है जब कोई समस्या आती है तो पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ बहुत ज्यादा ही एक्टिव होकर उस विषम परिस्थिति को हैंडल करने की क्षमता रखती है । इसके लिए वे किसी भी हद तक चली जाती है ।

मृदुला अकेली थी ।

परिस्थितियां बेहद जटिल थी और उसके साथ जाने वाला भी कोई नहीं था ।

उसने सोच विचार किया और दतिया की ओर ट्रेन से चल पडी ....

दतिया पीठ की यात्रा

सदानंद से देवी के संबंध मे सारी बातें सुनकर मृदुला ने दतिया शक्तिपीठ में जा कर पूजा पाठ करने का मन बना लिया । उसने इसके संबंध में जानकारियां इकट्ठा करनी चालू की ।

उसे पता चला कि वहां पर इस प्रकार के अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं । जिसके लिए पंडे तथा पुजारी वहां पर है । जो मनोकामना पूर्ति के लिए अनुष्ठान करते हैं ।

स्त्रियों को आमतौर पर कमजोर माना जाता है ! लेकिन मैंने देखा है जब कोई समस्या आती है तो पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ बहुत ज्यादा ही एक्टिव होकर उस विषम परिस्थिति को हैंडल करने की क्षमता रखती है । इसके लिए वे किसी भी हद तक चली जाती है ।

मृदुला अकेली थी ।

परिस्थितियां बेहद जटिल थी और उसके साथ जाने वाला भी कोई नहीं था ।

उसने सोच विचार किया और दतिया की ओर ट्रेन से चल पडी ....

दतिया पीठ की यात्रा

सदानंद से देवी के संबंध मे सारी बातें सुनकर मृदुला ने दतिया शक्तिपीठ में जा कर पूजा पाठ करने का मन बना लिया । उसने इसके संबंध में जानकारियां इकट्ठा करनी चालू की ।

उसे पता चला कि वहां पर इस प्रकार के अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं । जिसके लिए पंडे तथा पुजारी वहां पर है । जो मनोकामना पूर्ति के लिए अनुष्ठान करते हैं ।

स्त्रियों को आमतौर पर कमजोर माना जाता है ! लेकिन मैंने देखा है जब कोई समस्या आती है तो पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ बहुत ज्यादा ही एक्टिव होकर उस विषम परिस्थिति को हैंडल करने की क्षमता रखती है । इसके लिए वे किसी भी हद तक चली जाती है ।

मृदुला अकेली थी ।

परिस्थितियां बेहद जटिल थी और उसके साथ जाने वाला भी कोई नहीं था ।

उसने सोच विचार किया और दतिया की ओर ट्रेन से चल पडी ....

उधर मैं और जटाशंकर नेपाल से वापसी की यात्रा में थे , जटाशंकर की इच्छा थी कि दतिया में स्थित वनखंडेश्वर महादेव के दर्शन कर लिए जाएं । हम लोग दतिया उतर गए .....

दतिया को पीतांबरा पीठ स्थापित होने की वजह से सभी जानते हैं, लेकिन बहुत कम लोग ही जानते होंगे कि जहां आज मां पीतांबरा का मंदिर स्थापित है, वहां महाभारत के समय का एक बेहद प्राचीन शिव मंदिर भी स्थापित है । यह शिवलिंग महाभारत काल में गुरु द्रोणाचार्य के बेटे अश्वत्थामा ने स्थापित किया था ।

महाभारत में उल्लेख है कि दुर्योधन ने अपने अंतिम समय मे अश्वत्थामा से पांडवों के सिर मांगे थे । अश्वत्थामा अपने मित्र की इच्छा पूरी करने के लिए अपने आराध्य शिव के पास पहुंचा और साधना शुरु कर दी । वह साधना स्थली दतिया का वन खंडेश्वर ही थी ।

प्रसन्न हुए भगवान शिव से अश्वत्थामा ने पांडवों को परास्त करने का उपाय पूछा तो भगवान शिव ने एक दिव्यास्त्र अश्वत्थामा को दिया, जो सिर्फ अगले सूर्यास्त

तक प्रभावी था । दूसरा सूर्योदय होते ही इसका असर खत्म हो जाता ।

अश्वत्थामा ने रात में सोते हुए पांडवों के शिविर पर हमला बोल दिया ।
गलती से वह द्रोपदी के पांच पांडव पुत्रों को ही पांडव समझ बैठा और उनके सिर लेकर दुर्योधन के पास पहुंचा । दुर्योधन पांडव पुत्रों के सिर देख बहुत दुखी हुआ कि अश्वत्थामा ने वंश को ही खत्म कर दिया, इसके बाद उसकी मृत्यु हो गई।

बाद में भगवान कृष्ण ने दंड देने के लिए उसके मस्तिष्क में से वरदान से मिली विलक्षण मणि निकाल ली और उसे चिरंजीवी होकर अनंत काल तक भटकने का श्राप दिया । आज तक चिरंजीवी अश्वत्थामा अपने माथे का जख्म लेकर कभी असीरगढ़ के महादेव मंदिर, तो कभी दतिया के वन खंडेश्वर महादेव मंदिर में शिव आराधना करते सिद्ध साधकों को नजर आ जाते है ।

मेरे एक पाठक गुप्ताजी ने बताया कि पीतांबरा पीठ की 1935 में स्थापना कराने वाले स्वामीजी महाराज पहले

इसी मंदिर में आकर रहे थे । यह मंदिर इतने भयानक जंगल में था कि लोग मंदिर तक आने में डरते थे । यही नहीं वन में सभी प्रकार के भूत प्रेत आदि का वास हुआ करता था । कुल मिलाकर किसी भी व्यक्ति के लिए इस मंदिर तक पहुंचना बेहद दुस्साध्य कार्य हुआ करता था ।

स्वामीजी ने ही अतिघोर वन में होने की वजह से इसे वनखंडेश्वर महादेव नाम दिया था ।
उन्होंने महादेव की उग्रता को शांत किया और समस्त भूत-प्रेत आदि को भी नियंत्रित करके इसे जनसामान्य को दर्शन करने के लिए उपलब्ध कराया था ।

दतिया के बुजुर्ग साधु-संन्यासी और इतिहासकार बताते आए हैं कि इस मंदिर को बने करीब 500 साल हुए होंगे ।
ऐसा भी माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान ने करवाया था ।
पुजारी बताते हैं कि आज भी अलसुबह अश्वत्थामा भगवान शिव की पूजा करने आते हैं । सप्त चिरंजीवियों में अश्वत्थामा भी एक हैं । इसका अहसास पीतांबरा

पीठ की स्थापना कराने वाले स्वामी जी और मंदिर के दूसरे कई साधकों को वक्त-वक्त पर होता रहा है ।

हमारे सिद्ध पीठ ऐसे चमत्कारों से भरे पड़े हैं । अस्तु.....

उस समय मृदुला के पास कुल मिलाकर ग्यारह हजार रुपए थे जिसे लेकर वह निकली थी । दतिया पहुंचने के बाद वह पंडितों से मिली ।
अपनी समस्या बताई !
उन्होंने एक माह के अनुष्ठान की सलाह दी ।
खर्च बताया ! इक्यावन हजार रुपये ।

मृदुला की हालत खराब हो गई !
वह केस वकील आदि के चक्कर में अपनी जमा पूंजी का बहुत बड़ा हिस्सा खर्च कर चुकी थी । आगे कुछ संभावना भी नहीं दिख रही थी । इसलिए वह आगे के चार पांच महीनों का खर्च छोड़कर पैसे लेकर आई थी ।

वह दुखी और निराश होकर मां बगलामुखी के मंदिर की सीढ़ियों पर मुंह लटकाए बैठी सिसक रही थी ।
तभी मंदिर के पुजारी ने उसे आवाज दी ।

वह उठकर मंदिर के पास पहुंच गई ।

पुजारी ने उससे पूछा - क्या हुआ बेटा?

माधुरी फफक फफक कर रो पडी - उसने अपनी सारी राम कहानी पुजारी को कह सुनाई ।

पुजारी जी बोले - बेटा माई बहुत दयालु है । तू पूरे विश्वास व श्रद्धा के साथ एक फूल चढ़ा देगी तब भी वह उसे स्वीकार करके तेरा काम कर देंगी । तू काहे चिंता करती है ...

इतना कह कर उन्होंने मृदुला की तरफ पीले कनेर का एक फूल बढ़ा दिया.....

मृदुला ने पूरे श्रद्धा और विश्वास के साथ दिल की सारी बातें कहते हुए आंसुओं से भरी आंखों के साथ मां भगवती के चरणों में उस पुष्प को समर्पित कर दिया ।

जिसे मां ने भी सहजता से स्वीकार कर लिया ....
जटाशंकर में बहुत बदलाव आ चुका था । उसमें तंत्र और तंत्र साधना के प्रति जबरदस्त लगाव पैदा

हो गया था । संभवत: उसने रिया[1] के साथ रहकर जो कुछ देखा था वह उसके मस्तिष्क पर बहुत गहरे से असर कर गया था । उसके बाद माधुरी के रूप में तंत्र साधना की जो उच्चता उसने देखी उससे वह बहुत ज्यादा प्रभावित हो गया था ।

सारे रास्ते वह अलग-अलग प्रकार के सवाल करता रहा । मैं अपनी क्षमता के अनुसार उसका समाधान करने की कोशिश करता रहा ।

सनातन धर्म के अंदर जो भी साधनाए हैं, अगर आप उनको स्वयं करके देखें तो आपको एहसास होगा कि वास्तव में साधना से जीवन में फर्क पड़ता है और उस आध्यात्मिक शक्ति के होने का आभास भी होता है ।

तीर्थ यात्राएं अपनी जगह पर महत्वपूर्ण है !

शक्तिपीठ और मंदिर में जाना भी अपनी जगह महत्वपूर्ण है !!

लेकिन !!!

सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि आप स्वयं साधना करें !

मंत्र जाप करें !

कहा गया है कि

"पिंडे ब्रह्मांडम"

अर्थात हमारे शरीर के अंदर संपूर्ण ब्रह्मांड स्थित है ।
सारे देवी देवता भी उसमें ही सम्मिलित हैं ।

जैसे-जैसे हम अंदर की यात्रा प्रारंभ करते हैं,
चाहे वह मंत्र जाप के रूप में हो !
साधना के रूप में हो !
ध्यान के रूप में हो !
धीरे-धीरे संबंधित देवी या देवता का प्रभाव हमारे शरीर पर बढ़ने लगता है और उसके अस्तित्व का आभास धीरे धीरे अनुभव होने लगता है ।

जटाशंकर की तीर्थ यात्रा वाला फेस शायद समाप्त हो चुका था ...
और साधना वाला फेस चालू होने वाला था ।
मुझे भी खुशी थी कि मेरा एक मित्र साधना के क्षेत्र में आ रहा है ।

मंदिर के पुजारी के साथ हम काफी देर तक बैठे रहे ।
उन्होंने बहुत सारी बातें बताई.....

जिसमें एक कथा मुझे बेहद रोचक और अद्भुत लगी जो मैं आप लोगों को बताना चाहूंगा ।

दतिया के सिद्ध साधक ओझा जी

दतिया मे एक सिद्ध साधक ओझा जी हुआ करते थे । उस समय दतिया में राजा का शासन था । राजाजी उनको बहुत मानते थे । राजाओं को दरबारियों के बीच बैठना बड़ा अच्छा लगता है । राजाजी को भी ऐसा ही था । हर शाम वह अपने प्रिय दरबारियों के साथ राजमहल में बैठक किया करते थे । जिसमें उनके करीबी दरबारी ही शामिल हुआ करते थे । उनमें से ओझा जी भी एक थे ।

उस दिन अमावस्या की तिथि थी । महफिल जमी हुई थी ...

अमावस्या का मतलब होता है जिस रात को चंद्रमा बाहर नहीं निकलता !
पूरी रात चंद्रमा के दर्शन नहीं होते ।
हमारे पंचांग में दो पक्ष या पखवाड़े का एक महीना माना जाता है ।

जिसमें से एक को शुक्ल पक्ष और दूसरे को कृष्ण पक्ष कहा जाता है। दोनों पक्षों में 15-15 तिथियां होती है, जो प्रथमा या प्रतिपदा से प्रारंभ होती है।

शुक्ल पक्ष में तिथियों के आगे बढ़ने के साथ चंद्रमा का आकार बढ़ता जाता है। शुक्ल पक्ष की पंद्रहवीं तिथि को पूर्णिमा कहते हैं जिस दिन चांद अपने पूरे आकार में गोल दिखाई देता है।
पूर्णिमा के दिन का साधनाओं में भी विशेष महत्व है। इस दिन लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित साधनाएं विशेष फलदाई मानी जाती हैं और इसका सबसे सिद्ध मुहूर्त है शरद पूर्णिमा।

कृष्ण पक्ष में तिथियों के आगे बढ़ने के साथ चंद्रमा का आकार घटता जाता है। कृष्ण पक्ष की पंद्रहवीं तिथि को अमावस्या कहते हैं जिस दिन चांद पूरा गायब हो जाता है। अमावस्या की तिथि का उग्र तंत्र साधनाओं में विशेष महत्व माना जाता है।

तो उस दिन अमावस्या की तिथि थी और राजा के महल में शाम के समय सब लोग इकट्ठा हुए । उनमें ओझा जी भी शामिल थे।

बातों बातों में राजा ने ओझा जी से पूछ लिया - ओझा जी आज तिथि क्या है ?

उस दिन ओझा जी पता नहीं किस मूड में थे उन्होंने कह दिया - आज पूर्णिमा है ...

उनकी बात सुनकर वहां बैठे सारे लोग ठठा कर हंस पड़े ।

उनकी हंसी देखकर राजा ने पूछा - क्या बात है ?

तब उनमें से एक ने बताया - महाराज आज तो अमावस्या की तिथि है और ओझा जी आज पूर्णिमा बता रहे हैं, इसीलिए हम हंस पड़े ।

बात सुनकर राजा के चेहरे पर भी मुस्कुराहट आ गई ।

दरबारियों का इस प्रकार से हंसना ओझा जी को रास नहीं आया ।

वह अपनी बात पर अड़े रहे - आज अमावस्या नहीं पूर्णिमा है ।

उनकी बात सुनकर दरबारी फिर से हंस पड़े ।

जब दो-तीन बार ओझा जी अपनी बात को लेकर अड़े रहे तो राजा ने कहा - ओझा जी यह बताइए अगर आज पूर्णिमा है तो चंद्रमा कहां है ? उसके दर्शन क्यों नहीं हो रहे हैं ।

इतना सुनते ही ओझा जी के चेहरे पर उनकी साधना का दर्प बिखर गया ।
संसार मे तीन हठ प्रसिद्ध हैं , बाल हठ, स्त्री हठ और योग हठ ..... अब योगी हठ मे आ गया था !
उन्होंने कहा - तो आप चंद्रमा के दर्शन करना चाहते हैं ? अगर चंद्रमा के दर्शन हो जाएं तो आप मान लेंगे कि आज पूर्णिमा है ?

राजा ने दरबारियों की तरफ देखा और सभी ने सहमति में सिर हिलाया ।

मेज पर चांदी की थाल रखी हुई थी ।
ओझा जी ने उसे अपने हाथ में उठाया कुछ मंत्र जाप किया और उसे हवा में उछाल दिया ।
लगभग 100 मीटर की ऊंचाई पर जाकर वह थाल स्थिर हो गया और उसमें से सफेद रोशनी बिखरने लगी ।

और !

पूरे दतिया में रात भर पूर्णिमा का प्रकाश दिखता रहा .....

ऐसे महान साधक थे ओझा जी !!!

उनकी समाधि भी वन खंडेश्वर के पास बनी हुई है ।

वह धूमावती के सिद्ध साधक थे ।

धूमावती एक ऐसी महाविद्या है जो बेहद रहस्यमय है । उसके साधक भी बहुत कम होते हैं । ओझा जी के विषय में यह प्रसिद्ध था कि वे धूमावती महाविद्या का जिसे अग्नि विद्या भी कहा जाता है कंबल ओढ़ कर जप करते थे । जप पूरा होने पर कंबल खोलने के बाद जिस व्यक्ति को वे देख लेते थे वह जलकर भस्म हो जाता था .....

यह सारी बातें सुनकर जटाशंकर की रुचि तंत्र साधना के प्रति और भी बढ़ती जा रही थी ।

जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था दतिया शक्ति-पीठ में साधकों को बैठकर साधना करने के लिए

हाल बने हुए हैं जहां पर बैठ कर वे मंत्र जाप कर सकते हैं ।

शक्तिपीठ में मंत्र जाप करने से उसका प्रभाव बढ़ जाता है । इसलिए मैं भी वहां पर बैठकर बगलामुखी मंत्र जाप करने का सोच रहा था । जटाशंकर ने खुद भी बगलामुखी जाप करने की इच्छा जताई ।
मुझे बगलामुखी मंत्र याद था ।
वहां हाल की दीवाल पर भी बगलामुखी का मंत्र लिखा हुआ है मैंने जटाशंकर को उसे देखकर मंत्र जाप करने के लिए कहा ।

उस समय मृदुला हमारे पास ही बैठी हुई थी ।

लगभग एक घंटे तक हम लोग बैठकर मंत्र जाप करते रहे । उस समय शाम के सात बज रहे थे ।

जटाशंकर को भूख लग आई होगी सोच कर मैंने कहा - चलो जरा कुछ खा लेते हैं फिर आकर बैठेंगे ।
जटाशंकर तुरंत राजी हो गया ।

मृदुला की साधना

हम दोनों हॉल से निकलकर बाहर जा रहे थे तो सीढ़ियों पर मृदुला भी बैठी हुई थी । गोद मे उसका बेटा लेटा था । आंसुओं से भरी हुई उसकी उदास आंखों को देख कर मुझे अंदर से ऐसा लगा कि शायद उसे किसी मदद की जरूरत है ।

मैंने उससे पूछा - बहन जी ! क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूं ?

उसने झिझकते झिझकते अपनी पूरी कहानी कह सुनाई । मैं उस महिला के विश्वास धैर्य और जज्बे को देखकर बेहद प्रभावित हुआ ।

एक अकेली महिला !
अपने छोटे से बच्चे के साथ अपने पति को बचाने के लिए इतनी दूर मां के चरणों में आई हुई थी ।
मेरा हृदय उसके प्रति सम्मान से भर गया ।

मैंने कहा - मृदुला जी ! आप चलो ! भोजन करके आते हैं । उसके बाद मैं आपको साधना की विधि बता दूंगा

। उसके अनुसार आप यहां साधना प्रारंभ कर लेना और बाकी घर जाकर कर लेना ।

उसने पूछा - क्या ऐसा भी संभव है ? पूरी साधना यहां करना जरूरी नहीं है ।

मैंने कहा - आप छोटे बच्चे के साथ ! इस अनजान जगह पर 10-15 दिन कैसे रह पाओगे ? इससे अच्छा है कि आप अपने घर जाकर वहां आराम से साधना करो । इससे आपका मन भी स्थिर रहेगा । बच्चे को सुरक्षित जानकर आप ज्यादा ध्यान से साधना भी कर पाओगी ।

मेरी बात शायद उसे ठीक लगी ।

हम सब ने भोजन किया और वापस हाल में आ गए । रास्ते में हम लोगों ने तीन हल्दी की माला ले ली थी । बगलामुखी देवी की साधना में हल्दी की माला का उपयोग होता है । यदि हल्दी की माला ना मिले तो पीली हकीक की माला का भी उपयोग किया जा सकता है । यह दोनों ना मिले तो सर्व कार्य सिद्धि के

लिए रुद्राक्ष की माला तो हर साधना में उपयोग की ही जा सकती है ।

भोजन करके लौटने के बाद मैंने कागज पर मंत्र लिखकर मृदुला को दिया और उसे संभाल कर रख लेने के लिए कहा , ताकि घर जाकर उसे देख कर जाप कर सके ।

हम तीनों ने लगभग दो ढाई घंटे वहां पर मंत्र जाप किया और रात की ट्रेन पकड़ कर वापस दुर्ग की ओर रवाना हो गए । राजनांदगांव दुर्ग के बाद का स्टेशन है । मृदुला वहीं उतर गई । मैंने उसे अपना फोन नंबर भी दे दिया । ताकि किसी प्रकार की दिक्कत या जानकारी होने की जरूरत होने पर वह फोन कर सके ।

उसके दो महीने के बाद जब मैं ऑफिस में बैठा हुआ था तभी मेरे फोन की घंटी बजी । मैंने फोन उठाया । मृदुला थी ।

मृदुला ने कहा - मेरे पति जमानत पर रिहा हो गए हैं । वे आपसे मिलना चाहते हैं ।

मैंने कहा - शाम को 5 बजे मेरा ऑफिस बंद हो जाता है । आप छह बजे तक आ सकते हो ।
उसने कहा - आठ बजे तक आ सकते हैं क्या ?
मैंने कहा - आ जाएँ ।

रात लगभग 8:30 बजे एक गाड़ी आकर मेरे घर के सामने रुकी । मृदुला और उसके पति दोनों गाड़ी से उतर कर आए । मृदुला ने अपने पति से मेरा परिचय करवाया । उसे देख कर ऐसा लग रहा था जैसे लंबे समय से बीमार हो । आंखें गड्ढों में धंस रही थी शरीर दुबला हो गया था ।
दोनों बैठे उसके बाद बातचीत प्रारंभ हुई ।

मृदुला ने घटनाक्रम बताया - दतिया में आपसे मुलाकात होने के बाद मैं वापस घर लौट आई । यहां आने के बाद मैंने रोज रात को एक घंटे मंत्र जाप करना जारी रखा । आपने सही कहा था, अपने घर में आ जाने के बाद मुझे बच्चे की फिक्र कम हो गई थी । जब वह रात को सो जाता तो मैं भी निश्चिंत होकर अपने मंत्र जाप मे लग जाती । इस दौरान मुझे कई बार अपने कमरे में

खुशबू का अहसास होता था ! कई बार दीपक की लौ भभक कर जलने लगती थी !

कई बार ऐसा लगता !

जैसे देवी की जो फोटो मैं दतिया से लाई थी , उसमें प्रकाश सा निकल रहा हो !!

जैसे जैसे अनुभव मुझे होते गए मंत्र जाप के प्रति मेरा विश्वास भी बढ़ता चला गया ....

जिस जज के पास इनका केस था वह जमानत नहीं देने के लिए मशहूर है । जिस प्रकार के केस में मेरे पति को जेल हुई थी उसमे साल भर से पहले किसी को भी जमानत नहीं मिलती है । लेकिन मेरे पति को 6 महीने मे ही बेल मिल गई ।

इस घटना से हमारा विश्वास माताजी के प्रति जबरदस्त ढंग से बढ़ गया है ।

मुझे यह सुनकर बेहद खुशी हुई । एक निर्दोष व्यक्ति जेल से मुक्त हो गया ।

बगलामुखी अनुष्ठान

मुदुला ने कहा - हमारे ऊपर माता जी की इतनी कृपा हुई तो हमने सोचा है कि हम माँ बगलामुखी का अनुष्ठान संपन्न करेंगे । मुझे सबसे पहले आपका विचार आया । मैंने इनको आपके बारे में बताया । इनको भी आपसे मिलने की इच्छा थी । हम दोनों मिलकर बगलामुखी अनुष्ठान करना चाहते हैं । आप विधि विधान भी बता दें तो हम लोग यह कर पाएंगे ।

मैंने कागज और पेंसिल उनको दे दिया और कहा - आप नोट करते जाइए कि बगलामुखी साधना में क्या-क्या बातें महत्वपूर्ण होती है और किन किन बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है ।

सबसे पहली बात यह है कि यह साधना सात्विक साधना है । इसलिए साधना काल में आचार विचार व्यवहार तीनों की शुद्धता रखनी पड़ेगी । यथासंभव ब्रह्मचर्य का पालन करने की कोशिश करेंगे ।
सदानंद ने कहा - भैया ! पिछले छह महीने मैंने जिस पीड़ा को और अपमान को झेला है , उससे बचने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं ।

मैंने उसे आश्वस्त करते हुए कहा - आप चिंता मत करिए । भगवती बगलामुखी की कृपा से सब अच्छा ही होगा । फिर मैंने आगे बताया ...

बगलामुखी की साधना करते समय पीले रंग का विशेष महत्व होता है । इसलिए अपना बैठने का आसन और पहनने के वस्त्र भी अगर संभव हो तो पीले रखने चाहिए ।

यदि संभव ना हो तो कम से कम आसन तो पीले रंग का होना ही चाहिए ।

जिस दीपक का उपयोग करें इसमें डलने वाली बत्ती को भी पीले रंग में रंग लेना चाहिए ।

पीले रंग के तेल जैसे सरसों के तेल का दीपक जलाने के लिए उपयोग करना चाहिए ।

पीली सरसों की सात ढेरिया अपने सामने बनाकर हर ढेरी के ऊपर एक एक सुपारी रख देना चाहिए ।

सबसे पहले गुरु मंत्र की ग्यारह मालाएँ जापनी चाहिए :-

॥ ॐ गुं गुरुभ्यो नमः ॥

उसके बाद अपने हाथ में पानी लेकर संकल्प करना चाहिए कि

मैं (अपना नाम) आज से मेरी इच्छा (जो भी मनोकामना हो) की पूर्ति के लिए यह मंत्र जाप संपन्न कर रहा हूं । इसमें मैं कुल मिलाकर 1250 माला मंत्र जाप करूंगा । आप मेरी मनोकामना पूर्ण करें ।

ऐसा कहके उस पानी को जमीन पर छोड़ देना चाहिए । इसके बाद देवी को प्रणाम तथा ध्यान करके मंत्र जाप कर सकते हैं ।

महाविद्या बगलामुखी मंत्र :-

॥ ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानाम वाचम मुखम पदम स्तंभय जिह्वाम कीलय बुद्धिम विनाशय ह्लीं फट स्वाहा ॥

किसी भी माला में 108 मनके होते हैं लेकिन जब गिनती की जाती है तो 8 को छोड़ दिया जाता है और 100 की संख्या को गिना जाता है । इसका कारण यह है कि हमारे मंत्र जाप के दौरान कई बार मात्रा की गलती हो जाती है या उच्चारण में गड़बड़ी हो जाती है । उन सब गलतियों को क्षमा करने के लिए आठ मंत्र को छोड़

दिया जाता है । इस प्रकार से सवा लाख मंत्र जाप पूरा करने के लिए 1250 माला मंत्र जाप करना होता है ।

सारी बातें पूछ कर संतुष्ट होकर दोनों पति-पत्नी चले गए और उसके बाद मैं भी इस घटना को भूल गया ।

अनुष्ठान का प्रभाव

लगभग छह सात माह के बाद वह एक रविवार का दिन था और मैं नाश्ता करके आराम से अपने बिस्तर पर पड़ा हुआ था ....

तभी दरवाजे की घंटी बजी ।
जब मैंने दरवाजा खोला तो सामने मिठाई के डब्बे के साथ सदानंद, मृदुला और उनका बच्चा तीनों खड़े थे । मेरे कुछ समझने से पहले ही उन्होंने मिठाई का डब्बा मेरी तरफ बढ़ाया और कहा - लीजिए मुंह मीठा कीजिए ।
हम लोग अंदर बैठे और मृदुला ने पूरी कहानी शुरू से सुनाई ।

मृदुला बोली - आपने जो बगलामुखी का मंत्र बताया था वह मंत्र काफी बड़ा है । इसलिए हम दोनों ने नित्य 11 माला मंत्र जाप करने का विचार किया था और साधना करनी प्रारंभ कर दी थी। इसमे शुरु मे हमको करीब चार घंटे लग जाते थे । बाद मे लगभग तीन साढ़े तीन घंटे मे 11 माला पूरी हो जाती थी ।

दो महीने के बाद अगली पेशी थी । इस पूरे प्रकरण में आठ गवाह थे । इस पेशी में 2 गवाहों का बयान होना था । सभी गवाहों ने जो लिखित बयान दिए थे, वह लगभग एक जैसे थे । इसलिए केस बड़ा मजबूत सा था ।

मृदुला ने जिस वकील को केस दिया था । वह उस दिन बीमार पड़ गया और उसकी जगह में उसका असिस्टेंट केस लड़ रहा था । गवाहों के साथ जिरह के दौरान वकील ने दोनों को सवालों के घेरे में ऐसा फंसाया की वे अपने ही बयान को गलत साबित कर गए ।

मृदुला बोली - भैया ! मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वे वह चीजें नहीं बोल पा रहे थे , जो वह बोलना चाहते थे । न चाहते हुए भी उनके मुंह से ऐसी चीजें निकल जा रही थी, जो सदानंद जी के पक्ष में आ गई ।
पेशी पूरी होते तक अनुष्ठान का लगभग आधा मंत्र जाप हो चुका था ।
मृदुला और सदानंद का मंत्र जाप लगातार जारी था ।

परिस्थितियाँ बड़ी तेजी से पलट रही थीं । रजिस्ट्रार ऑफिस में एक नए रजिस्ट्रार आ चुके थे । जिनका नाम था पी. वेंकटेश ।
वेंकटेश बेहद दबंग किस्म का अधिकारी था और बेहद संपन्न परिवार का था । वह शौकिया सरकारी नौकरी मे आया था और केवल एक रुपया तंख्वाह लेकर बाकी पैसा प्रधानमंत्री राहत कोष मे दान कर देता था ।

एक दिन कामता प्रसाद ने उनके सामने अपनी दबंगई दिखाने का प्रयास किया ।
रजिस्ट्रार महोदय को बात लग गई । उस समय उन्होने उसे कुच्छ नहीं कहा ।
कामता प्रसाद ने सोचा कि यह गियर मे आ गया ।
लेकिन वह बहुत बड़ी गलतफहमी मे था ।

वेंकेटेश ने कामता प्रसाद की पूरी जन्म कुंडली निकलवा डाली ।
उनके नाम से लगभग छब्बीस शिकायतें पेंडिंग पड़ी हुई थी । जो अपने प्रभाव के कारण कामता प्रसाद ने दबा कर रखी हुई थी । उन सभी प्रकरणों को आधार बनाकर

रजिस्ट्रार महोदय ने कामता प्रसाद के खिलाफ जांच और निलंबन की अनुशंसा कर दी ।
एक हफ्ते में कामता प्रसाद निलंबित हो गए ।

रजिस्ट्रार महोदय यहीं नहीं रुके ।
उन्होंने कामता प्रसाद के दाहिने हाथ और बाएं हाथ माने जाने वाले बाबू वीरेंद्र चक्रवर्ती और आदर्श तिवारी को तत्काल प्रभाव से सुदूर बस्तर जिले में तबादला कर दिया .....

इसी प्रकार आने वाली दो पेशियों में बाकी के गवाह भी ऐसी कोई बात नहीं कर पाए जिसके आधार पर यह साबित हो सके कि सदानंद ने गलती की है ।

गवाहों मे दो गवाह सबसे महत्वपूर्ण थे ।
उनमें से एक गवाह डीमेन्द्र वर्मा कामता प्रसाद जी का था । वह किसी भी हालत में कामता प्रसाद के कहे अनुसार ही काम करने वाला था । सबसे ज्यादा डर भी उसी का था ।

सदानंद और मृदुला ने उससे मिलकर हाथ पैर भी जोड़ें और बचाने की प्रार्थना भी की । लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ । उसकी गवाही पर अब पूरा केस का दारोमदार टिका हुआ था ।

निराश और हताश सदानंद और मृदुला के पास अब माताजी के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था । जिस दिन पेशी थी, उसकी पहली रात दोनों बेहद दुखी मन से मंत्र जाप में लगे हुए थे । मृदुला की आंखों से लगातार आंसू बह रहे थे और उसका मंत्र जाप भी जारी था । यह मंत्र जाप का असर था या उसके आंसुओं का..... यह तो कह नहीं सकते मगर असर अगले दिन देखने को जरूर मिला ।

आखरी पेशी में न जाने क्या हुआ कि डीमेन्द्र भी अपने बयान से मुकर गया । उसे भी पक्षघाती घोषित कर दिया गया ।

नतीजा .....
सदानंद को रिहा कर दिया गया ।

जिस केस मे साल भर मे जमानत मिलना मुश्किल लग रहा था उसी केस मे सदानंद साल भर मे रिहा हो चूका था ।

उसके बाद मृदुला और सदानंद दतिया पीठ गए , माताजी का आशीर्वाद लेने ...

सदानंद वापस ऑफिस जाने लगा !

हर साल वे एक बार दतिया पीठ पर माथा टेकने जरुर जाते हैं .....

बगलामुखी साधना और शरीर की विद्युत ऊर्जा

साधना जगत मे देवी देवता कभी भी सिंगल नहीं होते । उनकी जोड़ी होती है । जैसे शिव है तो उनके साथ शक्ति है । विष्णु भगवान हैं तो उनके साथ लक्ष्मी जी है । ब्रह्मा जी हैं तो उनके साथ देवी सरस्वती विराजमान है ।

उसी प्रकार हर देवी शक्ति के साथ उनका एक भैरव भी माना गया है । जैसे महाकाली के साथ महाकाल शिव भैरव के रूप में विद्यमान है । देवी तारा के साथ अक्षोभ्य शिव भैरव के रूप में विद्यमान हैं !!

उसी प्रकार देवी बगलामुखी के साथ में जो भैरव विराजमान है,
उनका नाम है मृत्युंजय .....
जी हां ! मृत्युंजय !! अर्थात जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली हो ।

यह बगलामुखी साधना का एक अत्यंत गोपनीय तथ्य है ।

सभी यह मानते हैं कि शत्रु नाश तथा शत्रु विजय के लिए बगलामुखी एक प्रमुख देवी है लेकिन इस बात से कम लोग परिचित हैं कि उनके भैरव का नाम मृत्युंजय है ।

इसका बहुत ही गूढ़ अर्थ है.....
उसे मैं आपके सामने स्पष्ट कर रहा हूं ताकि आप बगलामुखी साधना से होने वाले लाभ के विषय में अच्छे से जान सके ।

शत्रु संहार की जब बात आती है तो हम सिर्फ बाहर के शत्रुओं के बारे में सोचते हैं ।

किसने हमसे पैसे उधार लिए और नहीं चुकाया ?
किसने हमारे ऊपर केस कर दिया ?
कौन हम से मारपीट कर सकता है ?
कौन हमारा बुरा सोचता है ?
किससे हमको खतरा है ?

यही सब हमारे दिमाग में आता है ।
लेकिन क्या वास्तव में सिर्फ यही हमारे शत्रु है ?

यह एक प्रामाणिक तथ्य है कि इस संसार में जितने लोग दूसरों के आक्रमण से मरते हैं, उससे ज्यादा लोग अपने अंदर के आक्रमण से अर्थात बीमारियों या शारीरिक परेशानियों की वजह से मरते हैं ।

मेरे गुरुदेव ने बताया था कि रोग, व्याधि,मानसिक तनाव, अनिद्रा, अपच, आदि भी हमारे सबसे बड़े शत्रु हैं । इनके संहार के लिए महामृत्युंजय भैरव संयुक्त देवी बगलामुखी की साधना बेहद लाभदायक होती है ।

आप मेडिकल टर्म्स पर जाए या विज्ञान की दृष्टि से देखें तो हमारे शरीर के अंदर बहुत सारी गतिविधियां ऐसी है जो अपने आप होती हैं । यानी ऑटोमेटिक है ।
इसमें सबसे प्रमुख गतिविधि जो हमारे जीवन के लिए बेहद जरूरी है !
वह है ! हमारे दिल का धड़कना !
हमारा दिल 24 घंटे धड़कता है !
जब हम सोते हैं !
तब भी धड़कता है !!!

क्या कभी आपने सोचा है कि वह अपने आप कैसे धड़कता है ?
उसे इस प्रकार अपने आप धड़कने के लिए आदेश कौन देता है ?

आपने पेसमेकर के बारे में जरूर सुना होगा । यह दिल के लिए तब लगाया जाता है जब वह धड़कने में परेशानी दिखाता है ।
यह परेशानी तब आती है जब हृदय को धड़कने के लिए आवश्यक सिग्नल नहीं मिलते हैं !

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि दिल को धड़कने के लिए बेहद कम पावर वाले इलेक्ट्रिक सिगनल्स शरीर प्रदान करता है । तभी वह लगातार धड़कता रहता है । जब यह सिग्नल कमजोर हो जाते हैं तो पेसमेकर लगाया जाता है ।
वह हृदय को आवश्यक सिग्नल प्रदान करके उसे धड़कने के लिए कहता है और व्यक्ति का हृदय सामान्य ढंग से काम करने लगता है ।

इसी प्रकार हम अब मस्तिष्क की बात करें ।

कई चीजें ऐसी होती है जिस पर तत्काल हम प्रतिक्रिया करते हैं, उदाहरण के लिए जब हम गर्म तवे पर हाथ लगा देते हैं तो सेकेंड से भी कम समय में हमारा हाथ तवे से दूर हट जाता है ।
यह प्रतिक्रिया करने का संकेत मस्तिष्क से आता है और मस्तिष्क में जो संकेत पैदा होते हैं वह भी हल्के पावर वाले विद्युत से ही काम करते हैं ।

आप सोच रहे होंगे कि साधना के बीच में मै यह बिजली कहां से लेकर आ गया ?
चिंता मत करिए ,
थोड़ा धैर्य रखिए !
सब स्पष्ट हो जाएगा ।

ऊपर के सारे उदाहरण जो मैंने दिए हैं उसके आधार पर हम मान सकते हैं कि कुल मिलाकर हमारे शरीर में सारी प्रक्रियाएं कम पावर वाली विद्युत शक्ति के माध्यम से ही चलती है !
नियंत्रित होती है !!
और सही रहती है !!!

इस विद्युत शक्ति को नियंत्रित और सुचारू रूप से चलते रहने का कार्य करने में सक्षम अगर कोई महाविद्या है !

तो वह है बगलामुखी !!!

इसी विषय पर आधारित है यह अगली कथा जिसे मैं आपके सामने रख रहा हूं ....

हरीनाथ गोयल के यौवन का रहस्य

मैं यानी अघोरानंद[2], जैसा की आप लोगों को पहले बता चुका हूं 16 वर्ष की उम्र में मैंने गुरु दीक्षा ले ली थी ।

उस समय कुछ खास समझ में नहीं आता था । इसलिए गुरुजी से मिल आते थे और वापस लौट आते थे । हां गुरु मंत्र का जाप बराबर जारी रहता था ।

उस समय मेरी उम्र करीब 21 या 22 साल की रही होगी ।

एक दिन एक गुरु भाई मिले जिनका नाम था हरीनाथ गोयल ।

हरिनाथ जी बड़े उम्र के थे !
लगभग 70 साल के !

मेरे साथ यह बड़ी अजीब सी बात थी कि मैं छोटा था, तब से मेरी अपने से दुगनी या तिगुनी उम्र वाले लोगों के साथ ज्यादा जमती थी !
कभी-कभी मुझे लगता था कि, मैं पैदाइशी बुजुर्ग हूं ।

हरिनाथ जी 70 साल की उम्र में भी 45-50 से ज्यादा के नहीं लगते थे ।
जब उन्होंने एक दिन मुझे अपनी वास्तविक उम्र बताई ! तो मुझे विश्वास नहीं हुआ ।
फिर वह मुझे अपने घर ले गए और अपनी पत्नी से मिलवाया ।
वह 65 साल की बुजुर्ग महिला थी ! जिसके चेहरे पर झुर्रियां आ चुकी थी, मैं उनको देखता रह गया ।

उसके बाद उन्होंने अपने बेटे से मुझे मिलवाया । बेटा लगभग 40 साल का था । अगर बाप बेटे को अगल-बगल खड़ा कर दिया जाए तो ऐसा लगता था जैसे दोनों भाई हो । मैं काफी देर तक आंखें फाड़ फाड़ कर उन दोनों को देखता रहा ।

उनके बेटे ने कहा - तुम आश्चर्य मत करो ! यह वास्तव में मेरे पिता है ! सभी लोगों को हमें देखकर ऐसा ही लगता है कि हम भाई हैं । यह मेरे पिता हैं और 70 साल के हैं । राज्य परिवहन निगम में ड्राइवर थे और रिटायर हो चुके हैं ! शायद इस बात से तुमको मेरी बात मानने में आसानी होगी ।

छत में आने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी और सीढ़ियों के बगल में बना हुआ था वह कमरा ।
लगभग 15 फीट बाई 20 फीट का कमरा रहा होगा ।
इतना बड़ा साधना कक्ष मैंने किसी और गुरु भाई का नहीं देखा । उसे साधना कक्ष की बजाय साधना हॉल कहना ज्यादा उचित होगा ।

उस कमरे में एक मंदिर रखा हुआ था जो लकड़ी से बना था ।
आमतौर पर मंदिर पीछे से बंद रहते हैं और सामने और अगल-बगल खुले रहते हैं ।
लेकिन वह मंदिर चारों तरफ से बंद था ।
सामने की तरफ दरवाजा था, जिसमें कुंडा लगा हुआ था ।
उसकी बगल में एक कलश रखा हुआ था । जो पीले रंग से रंगा हुआ था ।
कलश के ऊपर दीपक जल रहा था और हवा से बचाने के लिए कांच का कवर भी उसके ऊपर लगा हुआ था ।
हरिनाथ जी मुझे अपने साथ उस मंदिर के पास लेकर गए । उन्होंने मंदिर को खोल कर मुझे दिखाया । अंदर

में गुरुदेव की फोटो लगी हुई थी और उसके सामने सोने की थाली में सोने की बनी हुई देवी बगलामुखी की प्रतिमा रखी हुई थी ।

मुझे कल्पना भी नहीं थी कि मुझे इस प्रकार से देवी बगलामुखी की स्वर्ण प्रतिमा के दर्शन होंगे ।
उस समय तक मैंने किसी के पास भी सोने की बनी हुई प्रतिमा नहीं देखी थी ।
हां !
फिल्म वगैरह में अलग बात है , लेकिन वास्तविक जीवन में कभी भी ऐसी प्रतिमा नहीं देखी थी ।

उन्होंने मुझे बताया कि यह प्रतिमा उन्हें गुरुदेव ने दी थी ।
यह सुनकर मेरी आंतरिक इच्छा हो गई कि एक बार मैं उस मूर्ति को स्पर्श कर लूँ ।
मैं बोलने में झिझक रहा था, लेकिन शायद हरिनाथ जी मेरे दिल की बात समझ गए थे ।
उन्होंने कुछ कहा नहीं ।
तभी !
नीचे से उनकी पत्नी ने आवाज लगाई ।

में गुरुदेव की फोटो लगी हुई थी और उसके सामने सोने की थाली में सोने की बनी हुई देवी बगलामुखी की प्रतिमा रखी हुई थी ।

मुझे कल्पना भी नहीं थी कि मुझे इस प्रकार से देवी बगलामुखी की स्वर्ण प्रतिमा के दर्शन होंगे ।
उस समय तक मैंने किसी के पास भी सोने की बनी हुई प्रतिमा नहीं देखी थी ।
हां !
फिल्म वगैरह में अलग बात है , लेकिन वास्तविक जीवन में कभी भी ऐसी प्रतिमा नहीं देखी थी ।

उन्होंने मुझे बताया कि यह प्रतिमा उन्हें गुरुदेव ने दी थी ।
यह सुनकर मेरी आंतरिक इच्छा हो गई कि एक बार मैं उस मूर्ति को स्पर्श कर लूँ ।
मैं बोलने में झिझक रहा था, लेकिन शायद हरिनाथ जी मेरे दिल की बात समझ गए थे ।
उन्होंने कुछ कहा नहीं ।
तभी !
नीचे से उनकी पत्नी ने आवाज लगाई ।

हरिनाथ जी मुझसे बोले - तू यहीं रुक ! मैं अभी आता हूं ।

और वह नीचे चले गए ।

मूर्ति का स्पर्श

अब मेरे पास मौका था !
कि मैं मूर्ति को स्पर्श करके प्रणाम कर सकता था ।

मुझे ऐसा लगा कि भगवती ने मुझे स्वयं को स्पर्श करने का एक मौका दिया है .....
और मुझे इस मौके को छोड़ना नहीं चाहिए ।

मैंने हाथ आगे बढ़ा कर उस मूर्ति के चरणों को स्पर्श कर लिया .....

उसके बाद जो हुआ उस अनुभव के बाद मैंने कान पकड़ लिए कि कभी किसी साधक के कमरे में रखी हुई किसी भी चीज को छूने का प्रयास नहीं करूंगा ।
वह अनुभव ही इतना भयानक था .....

जैसे ही मैंने उस मूर्ति को स्पर्श किया .....
मुझे बड़े जोर का बिजली का झटका लगा और मैं लगभग अपने स्थान से उछलकर पीछे की तरफ गिर पड़ा और बेहोश हो गया .....

लगभग 10 मिनट के बाद हरीनाथ जी वापस लौटे....
मैं बेहोश पड़ा हुआ था ।
उनको सारी बात पता चल गई ।
उन्होंने गुरु मंत्र का उच्चारण करके मेरे ऊपर जल छिड़का ।

लगभग आधे घंटे के बाद मुझे होश आया ।
हरिनाथ जी सामने बैठे थे ।
मैंने अपना सर झुका लिया क्योंकि मुझसे गलती तो हुई थी ।

अभी भी मैं पूरी तरह से सामान्य नहीं हुआ था ।
मुझे कमरा घूमता हुआ लग रहा था ।

हरिनाथ जी नीचे से दो गिलास में शरबत लेकर आए थे । एक गिलास उन्होंने मुझे दिया । उसे मैं गटागट पी गया । मेरी आतुरता देखकर उन्होंने दूसरा गिलास भी मुझे ही पकड़ा दिया ।

मैं उसे भी पी गया .....

तब जाकर थोड़ी सी राहत महसूस हुई ।

हम सभी चमत्कार को नमस्कार करते हैं ।
मैं भी उसी प्रजाति का प्राणी था ।
देवी बगलामुखी के चमत्कार को देखकर मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हो गया ।
मेरे मन में विचार आया कि मुझे बगलामुखी साधना करनी चाहिए ।

उन्होने मुझसे पूछा - क्या मूर्ति का स्पर्श किया था ?
मैंने सर झुका कर सहमति में सिर हिलाया ।

हरीनाथ जी बोले - किसी भी साधक की वस्तु को बिना उसकी अनुमति के स्पर्श नहीं करना चाहिए ।

मैंने कहा - मुझे माफ कर दीजिए ! देवी के स्वरूप को देखकर और गुरुदेव के द्वारा प्रदत्त जानकर, मेरे मन में उनको स्पर्श करने की प्रबल इच्छा पैदा हो गई और मैं अपने आप को रोक नहीं पाया ।

उन्होने कहा - चलो जो हो गया सो हो गया ।

मैंने पूछा - क्या आपने मूर्ति के नीचे करंट लगा कर रखा हुआ है ?

वो ज़ोर से हंस पड़े !

बोले - क्या तुझे करंट का झटका लगा ?
मै बोला - हाँ ! जी बिल्कुल ऐसा लगा जैसे मैंने बिजली के नंगे तार को छू लिया हो ।

इसके बाद उन्होंने मुझे लगभग एक घंटे तक देवी बगलामुखी के बारे में और उनकी शक्तियों के बारे में विस्तार से बताया ।

हरीनाथ जी बोले - बेटा ! गुरुदेव ने मुझे बगलामुखी साधना करने के लिए कहा था । यह साधना बड़ी जटिल है । इसके करने से हमारे शरीर की जो विद्युत व्यवस्था है वह पूरी तरह से संतुलित हो जाती है । यह साधना करते समय बहुत ही विचित्र प्रकार के अनुभव होते हैं ।

मैंने पूछा - लेकिन बगलामुखी की साधना तो शत्रु संहार के लिए की जाती है ।

उन्होंने कहा - हां । शत्रु संहार के लिए देवी बगलामुखी के समान कोई साधना नहीं है । लेकिन शरीर के पूर्ण

स्वास्थ्य और पौरुष प्राप्त करने के लिए भी इससे बढ़िया साधना कोई नहीं है । मैंने इसी साधना के द्वारा यह स्थिति प्राप्त की है जिसकी वजह से तुम्हें मेरी उम्र का पता नहीं चल पाया । बगलामुखी की साधना से पूर्ण पुरुषत्व की प्राप्ति होती है क्योंकि यह स्तंभन की विद्या है और कामकला की पूर्णता के लिए स्तंभन एक अनिवार्य आवश्यकता है ।

बगलामुखी साधना और पुरुषत्व

मैंने उनसे पूछा- यह साधना कितने दिनों की है ?

वे बोले - साधना को दिन के आधार पर तय नहीं किया जा सकता । इसे लगातार करते रहना चाहिए ।

मैंने पूछा - आप कब से इस साधना को कर रहे हैं ?

हरीनाथ जी बोले - यह आज से लगभग 30-35 साल पहले की बात है ।
उस समय मेरा पुत्र हो चुका था ।
मैं लगातार बीमार रहता था ।
शरीर के किसी न किसी अंग में हमेशा दर्द रहता था ।
किसी भी काम को करने में मन नहीं लगता था ।
जब मैं बस चला कर वापस लौटता तो मेरी इच्छा होती कि मैं बिस्तर पर ही पड़ा रहा हूं ।
यहां तक कि मैं पत्नी के साथ किसी प्रकार का संबंध बनाने लायक भी नहीं रहा था । वह कई प्रकार से प्रयास करती ! लेकिन मुझसे कुछ भी नहीं हो पाता ।
उसने हर संभव प्रयास किया जो एक पत्नी कर सकती है

लेकिन मेरा शरीर उस मामले में एकदम अक्षम हो चुका था । मेरे अंग में कोई हरकत ही नहीं होती थी ।

मैंने पूछा - अपने इलाज नहीं करवाया ?
वे बोले - इलाज करवाया, लेकिन कोई बीमारी नहीं निकलती तो केवल ताकत की दवायें दी जाती । जिसका कोई असर नहीं पड़ता । एक गोली आती है 303 । जिसकी एक गोली से शरीर मे फर्क आ जाता है । मै तीन गोलिया खा लेता तो भी कुछ नहीं होता था । हाँ , गर्मी ज्यादा होने की वजह से दस्त लग जाते । फिर मैंने उसे खाना भी बंद कर दिया ....

कई बार मन में विचार आता कि आत्महत्या कर लूँ ! लेकिन पत्नी और बच्चे का ध्यान करके अपने विचारों को मोड़ लेता !
बड़ी मुश्किल से नौकरी कर पा रहा था । मेरी इस हालत को देखकर मेरे डिपार्टमेंट वाले भी मेरी काफी मदद कर दिया करते थे और मेरी नौकरी चल रही थी .....

मैंने पूछा - फिर आप ठीक कैसे हुए ?

वे बोले - उन दिनों गुरुजी रायपुर आए हुए थे ।
एक दोस्त के साथ मैं उनसे मिलने चला गया । काफी लंबी लाइन लगी हुई थी । मुझ में लाइन में खड़े होने की ताकत ही नहीं थी । मेरा दोस्त उनका शिष्य था । उसका नाम था श्याम दास कुर्रे ! वह लाइन में खड़ा हो गया । मैं वहीं जमीन पर बैठ गया .....
लगभग 4 घंटे के बाद हमारा नंबर आया । हम दोनों कमरे के अंदर पहुंचे ।

गुरुजी बोले - कुर्रे ! कैसा है ?

कुर्रे बोले - बढ़िया हूँ गुरुजी ! इसको लाया हूँ ।

वे मुझे देखकर बोले - अच्छा बोलो क्या बात है ? तुम इतने बीमार क्यों लग रहे हो ?

मैंने अपनी सारी राम कथा को कह सुनाई ।

वे थोड़ी देर के लिए आंख बंद करके बैठ गए ।

फिर उन्होने मुझे अपने पास बुलाया और मेरे माथे को हल्के से छूआ ।

उनके छूते ही मुझे बड़े जोर का झटका लगा । मेरा पूरा शरीर थरथरा गया .....

उन्होने एक छोटा सा तांबे का बना बगलामुखी यंत्र दिया और कागज मे गुरु मंत्र लिख कर दिया और उसका जाप करते रहने को कहा ।

जब मैं बाहर निकला तो मुझे ऐसा लगा कि मैं कमजोर नहीं मेरे अंदर ताकत आ रही है .....
उसके बाद मैंने चलते-फिरते उठते बैठते गुरु मंत्र का जाप चालू कर दिया ।

यह समझ लो कि मैं हर समय उसका जाप करता था !
गाड़ी चलाते समय भी !
ऑफिस में भी !
खाना खाते समय भी .....

धीरे धीरे मेरा स्वास्थ्य सुधरने लगा ....
लगभग 6 महीने हो चुके थे ....
अब मुझे उतनी कमजोरी नहीं लगती थी ।
लेकिन पत्नी के साथ अभी भी कुछ नहीं हो पाता था ।

इस अनुभव से मैं यह तो समझ गया था कि मेरा उद्धार गुरुजी ही करेंगे .....

एक दिन कुर्रे मेरे पास आया - कहा - गुरुजी नागपुर आ रहे हैं। मैं उनसे मिलने जा रहा हूं। अगर तुम आना चाहो तो आ सकते हो ?

मैं जैसे इसी अवसर की प्रतीक्षा में बैठा था। मैं तत्काल राजी हो गया। नागपुर में फिर गुरु जी से मुलाकात हुई और उन्होंने बगलामुखी साधना करने का निर्देश दिया । मंत्र आदि बताया.....

उन्होंने कहा - तीन महीने तक ब्रह्मचर्य का पालन करना है उसके बाद पत्नी से संबंध बना सकते हैं।

मैंने मन ही मन सोचा - जब शरीर साथ नहीं दे रहा है तो ब्रह्मचर्य तो अपने आप हो जा रहा है।

गुरुजी की क्रोध भरी आँखें मेरी ओर उठीं।
जैसे वे मेरे मन के भाव समझ गए।
वे कठोर शब्दों मे बोले - हरीनाथ ! तीन माह का ब्रह्मचर्य हर हालत मे रखना है। रख लेगा ?

मैंने सर झुकाकर सहमति मे सिर हिला दिया ।

गुरुजी फिर बोले - हर हाल मे ! तीन माह ब्रह्मचर्य रखना । वरना ..... सब पहले जैसा हो जाएगा .... यह सुनकर मैं अंदर ही अंदर कांप गया । जिस दर्दनाक परिस्थिति से गुजरा था उसमे लौटने की कल्पना करने से भी शरीर में सिहरन सी दौड़ जाती थी ।

मैंने 3 माह के ब्रह्मचर्य को जितना आसान समझा था .....

वह वास्तव में उतना आसान नहीं था ।
सिर्फ पंद्रह दिन के बाद मैं अपने शरीर में फर्क महसूस करने लगा ।
महीना भर बीतते बीतते मैं सामान्य हो गया ।
मैंने पत्नी को ब्रह्मचर्य के विषय में बता दिया था । वह भी अपनी तरफ से कोई प्रयास नहीं करती ।
लगभग दो महीना बीतते बीतते मेरे लिए नियंत्रण करना मुश्किल हो गया.....
किसी तरह मैं अपने आप को रोकता रहा ।

ढाई महीना बाद यह स्थिति हो गयी कि शरीर हर समय तैयार अवस्था में ही रहता ।

मेरे चेहरे पर चमक आने लगी थी ।

आखिरी के वह पंद्रह दिन मैंने कैसे काटे मैं उसको बता नहीं सकता .....

ऐसा लगता था जैसे भूखा शेर हो !

किसी कमरे में कैद हो !

और !

सामने में बकरा भी घूम रहा है ।

लेकिन उसका शिकार करने की परमिशन नहीं थी.....

और !

शेर मन मसोसकर अपनी जगह बैठा हुआ था !

जैसे ही तीन महीने पूरे हुए .....

उसके बाद के एक महीने तक जो हुआ वह शायद शादी के पहले महीने में भी नहीं हुआ था ।

पत्नी भी बहुत खुश थी .....

मैं बराबर गुरुजी से मिलता रहा .....

गुरु मंत्र और बगलामुखी साधना के अलावा मैंने कभी भी कुछ भी नहीं किया ।

धीरे-धीरे मेरा शरीर सामान्य होता चला गया ....
उस समय जो मेरी अवस्था थी आज भी लगभग वैसी ही है ।
यानी कि तुम यह समझ लो तीस साल गुजर गए लेकिन मेरे ऊपर समय का कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा .....

बगलामुखी साधना और गुरुमंत्र का पुरश्चरण

मैंने हरीनाथ जी से पूछा - क्या मैं बगलामुखी साधना कर सकता हूं ?

हरिनाथ जी ने कहा - क्यों नहीं ? बिल्कुल कर सकते हो ।

मैंने पूछा - क्या आप मुझे इसकी विधि बताएंगे ?

उन्होंने कहा - बिल्कुल बताऊंगा । लेकिन मेरी एक शर्त है ।

मैंने पूछा- क्या?

हरीनाथ जी बोले - बेटा ! तंत्र साधना में मूल रूप से शक्ति की साधना की जाती है । शक्ति के दस प्रचंड रूप माने गए हैं ! जिन्हें महाविद्या कहा गया है । उसमें से एक महाविद्या है बगलामुखी । यह एक उच्च स्तर की शक्ति साधना है जोकि गुरु कृपा से ही संपन्न की जा सकती है । इसलिए सबसे पहले तुमको गुरु मंत्र का एक पुरश्चरण करना पड़ेगा ।

मैंने कहा- मैं रोज गुरु मंत्र का जाप करता हूं ।

उन्होंने कहा - वह तो अच्छी बात है, लेकिन महाविद्या साधना के लिए यह जरूरी है कि तुम उसके पहले गुरु

मंत्र का एक पुरश्चरण अवश्य संपन्न करो । इससे तुम्हें साधना करने में आसानी होगी ।

मैंने पूछा - इसके लिए क्या करना होगा ?
उन्होंने बताया - तुम्हें सवा लाख गुरु मंत्र का जाप करना होगा । उसके बाद मैं तुम्हें इस साधना की विधि बताऊंगा ।

गुरु मंत्र का जाप मैं रोज करता था । इसलिए मुझे यह कोई बड़ी बात नहीं लगी ।
मैंने इसके लिए हामी भर दी !
मुझे ऐसा लगता था कि गुरु मंत्र जाप करना बहुत आसान है, लेकिन उस पुरश्चरण के दौरान मुझे पता चला कि वह कितना मुश्किल है ।
गुरु मंत्र का मुझे सवा लाख जाप करना था यानी कि 1250 मालाएँ ।

मैंने यह तय किया कि मैं रोज 51 माला मंत्र जाप करुंगा और लगभग 25 दिन में मेरा गुरु मंत्र का पुरश्चरण पूरा हो जाता है ।

उन्होंने गुरु साधना के लिए कुछ विधि और नियम भी बताए ।

पहला नियम था : सभी प्रकार के रास रंग से दूर रहें ।

इसका मतलब था कि उस दौरान ना तो गाना सुनना है !

ना ही फिल्में देखनी है !

और ना ही सीरियल वगैरा देखना है ।

दूसरा नियम था : मौन !

इसका मतलब था कि यथासंभव मौन रहना है ।

किसी से तब तक बातचीत नहीं करना है जब तक वह आवश्यक ना हो ।

यानी कि बेवजह की बकवास दूसरों की बुराई इत्यादि से बचना है ।

तीसरा नियम था : ब्रह्म मुहूर्त में साधना

ब्रह्म मुहूर्त का मतलब है सुबह 3 बजे से 6 बजे तक का समय...

इसी समय में बैठकर मंत्र जाप करना है ।

हरीनाथ जी ने कहा - ब्रह्म मुहूर्त का समय गुरुओं का समय होता है ! शिव का समय होता है । यह वह समय

होता है जब सभी गुरु शक्तियां साधना में लीन होती है । उनके साधना में लीन होने का मतलब यह होता है कि वे इस कालखंड में अपने शिष्यों को साधनात्मक निर्देश देने के लिए तथा उन्हें आध्यात्मिक रूप से शक्तियां प्रदान करने के लिए साधना में बैठे रहते हैं ।

जो भी शिष्य या साधक इस कालखंड में अर्थात ब्रह्म मुहूर्त में गुरु मंत्र का जाप करता है, उसको कई बार गुरुदेव स्वयं सूक्ष्म रूप से उनके साधना कक्ष में दर्शन भी दे देते हैं ।
यह सब सुनकर गुरु साधना करने का उत्साह और भी बढ़ गया.....

सुबह पांच साढ़े पाँच तक तो मैं उठ जाता था ।
लेकिन .....
तीन बजे अगर साधना मे बैठना है तो कम से कम 2:30 बजे उठना पड़ेगा ।

उस समय चाबी वाली अलार्म घड़ी आती थी ।
जिसमें एक अलार्म ही सेट हो पाता था ।
आज तो आप मोबाइल में 5-6 अलार्म लगा सकते हैं ।

यहां तक कि पांच पांच मिनट में वह रिपीट भी हो जाता है ।

चाबी वाले अलार्म में दिक्कत यह थी कि अगर आप उसके बजने के बाद उसका बटन दबा दो तो फिर वह नहीं बजता था ।

मुझे बड़ा विश्वास था कि मैं सुबह उठ जाऊंगा लेकिन हुआ वही जो होता है ।

नींद की खुमारी में अलार्म का बटन दबाकर मैं सो गया और नींद खुली तो 6 बज चुके थे ।

ऐसा एक-दो दिन नहीं बल्कि पूरे 8 दिन तक हुआ .....

साधक को आलसी नहीं होना चाहिए लेकिन आलस एक ऐसा गुण है जो हर किसी में किसी न किसी रूप में पाया ही जाता है ।

उसी आलस ने मेरा रास्ता रोक रखा था ....

नौवें दिन में अपने गुरु मंत्र जाप में बैठा हुआ था जो मैं रोज करता था ...

मैंने गुरुजी से शिकायत की कि गुरुजी में उठ नहीं पा रहा ! कुछ करिए ताकि में सुबह उठ पाऊं और आपकी साधना कर सकूँ ।

इतना बोल कर मैं उस बात को भूल गया ।

लेकिन !

गुरुवर नहीं भूले .....

रात के लगभग 2:30 बजे मुझे अचानक ऐसा लगा जैसे किसी ने मुझे जोर से लात मारी हो ।

मैं हड़बड़ा कर उठ कर बैठ गया ....

वहां पर कोई नहीं था ।

मैंने थोड़ी देर इधर-उधर देखा लेकिन कुछ भी नजर नहीं आया ।

मैं वापस लेट गया और मेरे लेटते ही अलार्म का बजना चालू हो गया .....

आदतन फिर से मैंने अलार्म का बटन दबाया और बिस्तर पर लुढ़क गया .....

मुश्किल से दो-तीन मिनट गुजरे होंगे फिर एक जोर की लात मुझे पड़ी !

इस बार की लात पिछली लात की तुलना में ज्यादा तेज थी ।

मैं हड़बड़ा कर उठ गया !

तभी !

मुझे ध्यान आया कि मुझे तो साधना करनी है ।

मैंने उठकर घड़ी देखी, 2:40 हो चुके थे । मुझे थोड़ा-थोड़ा समझ में आ गया था कि लात किसने मारी है ।

मैंने गुरु जी को प्रणाम किया । क्षमा प्रार्थना की !

तैयारी करके लगभग 3:10 पर बैठ गया....

मैं दुबला पतला था और पद्मासन भी लगा लेता था यानी कुल मिलाकर शरीर में लचक थी ! मुझे लगता था कि मैं आसानी से दो-तीन घंटे बैठ सकता हूं .....

मंत्र जाप चालू हुआ .....

सब ठीक चल रहा था ।

लेकिन !

आधा घंटा बीतते बीतते मेरे पांव में दर्द चालू हो गया ..... दर्द भी हल्का-फुल्का नहीं था !

तेज दर्द !!!!

अगले 2 घंटे मैंने पाँव हिलाकर, पांव फैलाकर अलग-अलग मुद्राओं में बैठकर मंत्र जाप किया । तब जाकर मेरा मंत्र जाप पूरा हो पाया ।

आसन में बैठकर मंत्र जाप करना चाहिए और एक ही मुद्रा में बैठकर मंत्र जाप करना चाहिए ऐसा कहा जाता है ।

मेरा अनुभव है कि अगर आप ऐसा करने में सक्षम नहीं है तो आप कुर्सी पर बैठकर मंत्र जाप कर ले ।

हाथ पैर हिला कर मुद्रा चेंज करके मंत्र जाप कर ले ।

या बीच में ब्रेक लेकर मंत्र जाप कर ले ....

तब भी सौ प्रतिशत नहीं तो 50-60 प्रतिशत लाभ तो होता ही है ।

यानी कि

"नहीं मामा से ..... काना मामा बेहतर"

सोचना चाहिए और जितनी हमारी क्षमता हो उतना मंत्र जाप कर लेना चाहिए ।

खैर...

मुझे यह समझ में नहीं आया कि उस दिन इतना तेज दर्द क्यों हुआ ?

मैं सोच रहा था कि उठकर बाम लगा लूंगा .....

जब आसन से उठ कर खड़ा हुआ तो दर्द गायब हो गया ।

तब मेरी बत्ती जली .....
और मुझे समझ में आया कि यह तो गुरुजी का परीक्षण था ।

उस घटना से मुझे यह समझ में आ गया कि गुरु की इच्छा के बिना गुरु साधना नहीं हो सकती । इसलिए अगले दिन से रोज गुरुजी के सामने यह बोल कर सोता की गुरु जी उठा देना और 2:30 बजे अपने आप नींद खुल जाती .....

आप शायद विश्वास नहीं करेंगे लेकिन 10 में से 9 दिन ऐसा होता जब मेरे उठने के बाद अलार्म बजता....

दरअसल हमारे शरीर के अंदर भी एक जैविक घड़ी है .....
अगर आप किसी निश्चित समय पर 10 या 12 दिन उठ जाए तो आपका शरीर आपको अपने आप उसी समय पर उठा देता है ....
शायद मेरी वही जैविक घड़ी सक्रिय हो गई और फिर रोज रात को 2:30 बजे मेरी नींद अपने आप खुल जाती थी ।

दूसरी सुबह मैं फिर से साधना में बैठा । सोच कर बैठा था कि आज फिर से दर्द होगा लेकिन उस दिन बिल्कुल दर्द नहीं हुआ ।
मैंने बड़े आराम से 51 माला गुरु मंत्र का जाप कर लिया.....

लगभग 10 दिनों तक साधना बड़े आराम से चलती रही ।
ग्यारहवें दिन जब मैं सुबह मंत्र जाप कर रहा था .....
मुझे ऐसा लगा जैसे कोई दरवाजा खटखटा रहा है ।
आवाज उस दरवाजे से आ रही थी जो बालकनी की तरफ खुलती थी । मेरा कमरा पहले तल्ले पर था ।
बालकनी में नीचे से ऊपर चढ़ने की कोई सीढी नहीं थी ....
अचानक मेरे दिमाग मे क्लिक हुआ ....
कोई वहां पर कैसे ठक ठक कर सकता है ?
और अबकी बार मुझे समझ में आ गया कि यह है परीक्षण 2.0 !!!

डर तो लग रहा था मगर फिर भी धैर्य बनाकर मंत्र जाप करता रहा ।

हरीनाथ जी ने बताया था कि कुछ भी हो जाए गुरु मंत्र का जाप मत छोड़ना ।

बीच-बीच में दरवाजे का खटखटाना चलता रहा और साथ ही मेरा मंत्र जाप भी .....

ग्यरहवाँ दिन उस प्रकार से निकल गया । फिर दो-तीन दिन तक कुछ नहीं हुआ ।

वह साधना का 15वां दिन था ।

मंत्र जाप करते समय हल्की-हल्की गुलाब की खुशबू आने लगी !

वह खुशबू ऐसी थी ..... जैसे..... संभवतः तब लगता होगा जब आप गुलाब के बगीचे में बैठे हो ।

मन को मोह लेने वाली खुशबू !

मैं गहरी गहरी सांसें खींचकर उस खुशबू को अपने अंदर उतारने की कोशिश करता हुआ मंत्र जाप में लगा हुआ था ....

उसी खुशबू के साथ उस दिन का मंत्र जाप पूरा हो गया और कोई दिक्कत सामने नहीं आई.....

उस दिन लगभग शाम के पाँच बजे की बात है.....

मैं अपने कमरे में लेटा हुआ था । घर पर कोई नहीं था । पड़ोस वाले घर की मीना भाभी शक्कर मांगने के लिए आई । उनका मेरे घर आना जाना लगा रहता था । मेरे पास कोई चीज कम रहती थी तो मैं उनसे मांग लेता । उनके पास नहीं होती थी तो वह मेरे पास से ले जाती थी ।

उनकी नजरों में मैं एक सीधा साधा युवक था .....
और मेरी नजरों में वह एक अच्छे स्वभाव वाली महिला .....
उस दिन जब वह आई तो उन्हें मैं देखता रह गया ।
उन्होंने एक सिल्क की साड़ी पहनी हुई थी । जो उनके शरीर से चिपकी हुई थी और हर कटाव को उभार कर दिखा रही थी ।

मैं उनको कुछ देर अपलक देखता रह गया .....

थोड़ी देर में मैंने अपने आप को संभाला और चीनी की कटोरी उनके हाथ से ले ली ।
मैं चीनी निकालने के लिए रसोई में घुसा !

तो मेरे पीछे पीछे मीना भाभी भी आ गई । यहां तक तो सब सामान्य था !

लेकिन !

उसके बाद जो हुआ वह असामान्य था .....

आमतौर पर मीना भाभी अपनी जरूरत का सामान लेकर , थैंक यू ! बोल कर चली जाती ।

लेकिन.....

उस दिन वह चीनी का कटोरा लेकर मेरे बिस्तर पर बैठ गई ....

मैं उनके सामने खड़ा था .....

उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और अपने बगल में बिस्तर पर बैठा दिया .....

बीस बाईस साल के एक युवक को .....

अगर कोई महिला पकड़ ले तो उसके अंदर पूरा तूफान भर जाता है .....

मेरे साथ भी कुछ कुछ वैसा ही हुआ !

क्योंकि !

इसके पहले कभी भी मीना भाभी ने मेरे शरीर को टच नहीं किया था ।

बिस्तर पर बैठने के बाद भी उन्होंने मेरा हाथ नहीं छोड़ा !
वह इधर उधर की बातें करने लगी .....

लगभग पाँच मिनट तक वे वही बैठी मेरे साथ बात करती रही और उन पाँच मिनटों में मैंने न जाने क्या-क्या सोच लिया .....
और मेरे अंदर पूरी हलचल मच गई ....
जाते-जाते दरवाजे पर उन्होंने मेरे गाल पर हाथ भी फेरा !
और !
तिरछी नजरों से मुझे देखती हुई बोली - आज तेरे भैया गांव गए हैं .... दो दिन बाद ही लौटेंगे ।

उस समय इतना खुला वातावरण नहीं था.....
उन्होंने जितना कह दिया था .....
वह जरूरत से ज्यादा था.....
उस दिन शाम तक मेरे मन में वासना से भरे विचार और नई नई कल्पनाएं जन्म लेती रही.....
मैं उन्हें नियंत्रित करने की असफल कोशिश करता रहा.....
बाईस वर्ष का युवक अपने यौवन के चरम पर होता है और उस समय वह किसी भूखे शेर की तरह संभावनाओं

की तलाश करता हुआ चलता है । आपने भी इसे अवश्य अनुभव किया होगा ...

मेरी स्थिति तो बड़ी गंभीर हो गई थी !
संभावना प्रत्यक्ष में सामने आकर खड़ी थी !
लेकिन ....
साधना का जो प्रतिबंध था वह मुझे आगे बढ़ने से रोक रहा था .....
मन में उमड़ते घुमड़ते उस तूफान के साथ मैं सो गया.....
सपने में मैंने वह सब कर डाला .....
जो कल्पना में था .....
और मुझे स्वप्नदोष हो गया.....

इसके साथ ही झटके से मेरी नींद भी खुल गई....
जो नहीं होना था .....
वह तो हो चुका था ।
अब क्या ???

यह यक्ष प्रश्न मेरे सामने मुंह फाड़ कर खड़ा था ।
जिसका जवाब ढूंढना बेहद जरूरी था ।

इस सवाल का जवाब देने के लिए मेरे पास एक ही आदमी था। इसलिए मैं नहा धोकर हरीनाथ जी के घर की ओर तेजी से निकला।
वहां पहुंचकर मैंने हरीनाथ जी को सारी बात साफ-साफ बता दी।

उन्होंने कहा - साधना तो खंडित हो गई। अब फिर से चालू करनी पड़ेगी। तुम सोते समय पांव ठंडे पानी से धो कर सोया करो। इससे मन शांत रहेगा। सोने से पहले 11 बार गुरु मंत्र का जाप करके सोया करो॥
ऐसी परिस्थितियों से बचे रहोगे ....
मैं दुखी हुआ और वापस लौट आया।

पंद्रह दिन की साधना यानी कि लगभग लगभग आधी से ज्यादा मंत्र जाप हो चुका था। वह फिर से करना पड़ेगा, यह सोचकर मन में थोड़ा सा खेद भी हुआ कि काश मैं अपने आपको थोड़ा कंट्रोल कर लेता।
लेकिन
"अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत"
जो होना था वह हो चुका था .....
अब आगे का सोचना था.....

वापस लौटते लौटते शाम के 7 बज चुके थे ।
मैं मन ही मन सोच रहा था - साधना तो खंडित हो गई । इसे तो फिर से शुरू करना ही पड़ेगा । मिले हुए अवसर का लाभ उठा लूं क्या?
ऐसे ढेर सारे विचार मन में उमड़ घुमड़ कर आ रहे थे .....

मेरे उन सारे विचारों पर पानी फिर गया जब मैं घर पहुंचा ।
मैंने देखा भैया और मीना भाभी दोनों साथ साथ खड़े हैं ।
मैंने अपने मन की निराशा को दबाकर भैया से पूछा - आप तो गांव जाने वाले थे ?
उन्होंने हँसकर कहा - हाँ ! सुबह-सुबह गए थे । हम दोनों अभी अभी तो गांव से वापस आए हैं ।
यह सुनकर मैं चकरा गया । थोड़ी बहुत बातें करके कमरे में आ गया ।

मेरे चक्कर आने की वजह यह थी कि भैया का गांव लगभग 85 किलोमीटर दूर था ।
जहां से आने में कम से कम दो से ढाई घंटे लगते ।

अगर जाकर भी आए हो तो 5 घंटे लगने चाहिए थे ।

भैया तो बोल रहे हैं कि सुबह से गांव गए थे !
लगभग दो घंटा पहले भाभी मेरे घर पर आई थी !! जो कि असंभव है !!!!
तो फिर वह कौन थी ?
जो मेरे घर आई.....

मेरी समझ में कुछ नहीं आया !
थोड़ी देर सोचने के बाद मैं उल्टे पांव हरीनाथ जी के घर की ओर चला गया उन्हे जाकर मैंने सारी बात बताई और कहा - वह तो गांव में थी, फिर मेरे पास कौन आया था .?

मेरी बात सुनकर हरीनाथ जी ने जोर का ठहाका लगाया और कहा - बेटा यह साधना है ,और गुरु की माया गुरु ही जाने । उनकी कृपा के बिना और उनकी इच्छा के बिना किसी की मजाल नहीं है कि वह गुरु साधना कर ले । जब तक तुम अपने अंदर इस बात को नहीं बैठा लोगे कि गुरु कृपा के बिना गुरु साधना नहीं होती तब तक तुम गुरु साधना नहीं कर पाओगे । उनके परीक्षणों

से बचना बहुत मुश्किल है । उनसे बचने के लिए भी उनकी कृपा चाहिए । अपने आप को पूरी तरह से उनके चरणों में समर्पित करके शिशु भाव से साधना करो । तभी तुम सफल हो पाओगे ।

वरना !

ऐसे ही परीक्षणों में समय बर्बाद करते रहोगे.....

अब बात मेरी समझ में आ चुकी थी...

दो दिन के बाद मैंने फिर से साधना प्रारंभ की ।

इस बार साधना का संकल्प लेते समय ही गुरुदेव के चरणों में निवेदन कर दिया - प्रभु मैं अज्ञानी हूं ! क्षमता नहीं है कि मैं आपकी साधना कर सकूं ! आप कृपा करें और मुझे सामर्थ्य प्रदान करें कि मैं गुरु मंत्र का सवा लाख जाप पूर्ण कर सकूं .....

उसके बाद मेरा मंत्र जाप प्रारंभ हुआ और कई प्रकार की घटनाएं घटी लेकिन कुल मिलाकर सब ठीक ठाक चलता रहा .....

बीस दिनों की साधना संपन्न हो गई ।

अब केवल 5 दिन बचे थे .....

इक्कीसवे दिन जब मैं साधना में बैठा तब फिर से पांव का दर्द चालू हो गया । लगभग आधा पौन घंटे तक दर्द बना रहा और मैं भी जिद के साथ अपने आसन पर बैठा रहा । फिर वह दर्द अपने आप गायब हो गया । लगभग डेढ़ घंटे के बाद फिर से तेज दर्द उठने लगा । कमरे में हल्दी जैसी खुशबू आने लगी .....
दीपक की लौ सामान्य से ज्यादा लंबी हो गई और लहरा लहरा कर जलने लगी ।
जैसे शक्ति की उपस्थिति का प्रमाण दे रही हो.....
अधिकांश साधकों को साधना के दौरान इस प्रकार के अनुभव होते हैं ।
जो इस बात का प्रमाण है कि आपकी साधना सही चल रही है ।
खुशबू का आना !
किसी की उपस्थिति का आभास होना !
दीपक की लौ का सामान्य से अलग तरह से जलना !!
यह सब वे सामान्य लक्षण है जो शक्ति की उपस्थिति बताते हैं ।

शक्तियों को प्रत्यक्ष देख पाना बहुत लंबी साधना के बाद ही संभव हो पाता है ।
दस दिन, पंद्रह दिन, महीना भर या साल भर की साधना करने से देवी शक्ति प्रत्यक्ष सामने खड़ी हो जाएगी ऐसा सोचना भी बेवकूफी है ।

वह इसी प्रकार से अपनी उपस्थिति का आभास करा देती है ।
उन शक्तियों को देखने के लिए साधक के शरीर में भी उतनी शक्ति होनी चाहिए जो कई वर्षों तक लगातार साधना के बाद ही आती है .....
खैर.....

वह स्थिति मेरे मंत्र जाप के पूरा होने तक वैसे ही बनी रही।
कुल मिलाकर 21 वे दिन का मंत्र जाप भी पूरा हो गया ।
तीन दिन और बिना किसी बाधा या विशेष घटना के बीत गए ।
वह पच्चीसवाँ दिन था ॥

मैं इस इंतजार में बैठा था कि 25 दिन की साधना जैसे ही पूरी हो जाएगी मुझे कुछ विशेष अनुभव होंगे या गुरुजी खुद प्रकट हो जाएंगे .....
लेकिन वैसा कुछ भी नहीं हुआ ....

उस दिन बैठते ही गुलाब की खुशबू अवश्य आती रही । लेकिन मंत्र जाप के दौरान न किसी प्रकार का अनुभव हुआ ....
और ना ही अंत में कोई प्रत्यक्ष हुआ ....
इस प्रकार से मेरा सवा लाख गुरु मंत्र का जाप पूरा हो गया ।
मंत्र जाप पूरा हो जाने की प्रसन्नता थी लेकिन कुछ दिखा नहीं इस बात की कहीं टीस भी थी ...

सुबह लगभग 10 बजे के आसपास में हरिनाथ जी के घर में पहुंचा ।
नीचे माताजी मिली उन्होंने कहा - ऊपर जाकर बैठ जाओ । अभी पूजा करके आएंगे, तब तुमसे मिलेंगे ।
हरिनाथ जी अपने साधना कक्ष में पूजा कर रहे थे इसलिए मैं बाहर बैठा रहा । जब उनकी पूजा साधना पूरी हो गई तो उन्होंने मुझे आवाज लगाई ।

मैं आश्चर्य में पड़ गया कि इन्हें कैसे पता चला कि मैं आ गया हूं ।

वह था मेरे जीवन का पहला अनुभव !

जिसमें मुझे यह पता चला कि जो वास्तव में साधक होता है.....

उसे अपने आसपास में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में आभास हो जाता है या पता चल जाता है ।

मेरे सामने किसी ने भी उनके साधना कक्ष में जाकर नहीं बताया था कि मैं आ गया हूं ।

फिर भी उन्होंने मुझे आवाज दी....

उसका मतलब उनको पता था कि मैं बाहर छत पर खड़ा हूं.....

साधना कक्ष के अंदर प्रवेश करते ही मुझे बड़ा सुखद अनुभव हुआ ।

जैसे गुलाब की खुशबू मैंने सुबह अपने साधना कक्ष में महसूस की थी ठीक वैसी खुशबू उस समय उस कमरे में फैली हुई थी .....

उन्होंने मुझे अपने पास बैठाया और पूछा - बेटा पुरश्चरण पूरा हो गया?

मैंने जवाब दिया - हां ! हरीनाथ जी ! पूरा तो हो गया लेकिन मुझे गुरु जी ने दर्शन नहीं दिए .....

वह हंस पड़े बोले- गुरुजी तो यहां भी हैं ! तुझे दर्शन हो रहे हैं क्या ?

मैं चारों तरफ देखकर बोला - कहां है गुरु जी ? मुझे तो नहीं दिखाई दे रहे ।

वह बोले - तुझे कुछ खुशबू आ रही है ।

मैं बोला- हां ! गुलाब की खुशबू तो आ रही है ।

उन्होंने पूछा - तुझे मेरे साधना कक्ष में कहीं भी गुलाब दिख रहा है ।

मैंने चारों तरफ देखा !

कहीं भी गुलाब नहीं था !!

सामने में देवी के चित्र के सामने एक गुड़हल का फूल चढ़ा हुआ था !!!

गुरु जी के चित्र के सामने एक मोगरे का फूल चढ़ा हुआ था !!!!

लेकिन जो खुशबू बिखरी हुई थी.....

वह गुलाब की थी !!!!!

मैंने उनकी तरफ प्रश्नवाचक निगाहों से देखते हुए ना में सिर हिलाया ।

उन्होंने कहा - बेटा ! दिव्य शक्तियों को देखने के लिए साधक में भी क्षमता होनी चाहिए । तुम अभी इस क्षेत्र में नए हो ।

जैसे जैसे तुम्हारा मंत्र जाप बढ़ता जाएगा ! तुम्हारे नेत्रों में वह क्षमता आएगी कि इन शक्तियों को तुम देख सको । गुरुजी जब आते हैं तो उनकी उपस्थिति का प्रमाण होता है .... यह गुलाब की खुशबू ....

इस प्रकार के अनुभव उन सारे साधकों को होते हैं जो मन लगाकर गुरु मंत्र का जाप करते हैं ।

कभी-कभी अष्टगंध की खुशबू भी आती है ...

लेकिन अधिकतर गुलाब की खुशबू ही आती है .....

यह सब सुनकर मेरे मन मे थोड़ा दुख हुआ कि मैं गुरु जी को देखने के लायक नहीं हूं .....

लेकिन यह जानकर खुशी भी हुई कि गुलाब की खुशबू आने का मतलब गुरुदेव वहां पर सूक्ष्म रूप में आए थे ।

यानी मेरी साधना सफल हुई ।

मैंने पूछा- क्या अब आप मुझे बगलामुखी साधना की विधि बताएंगे ।

उन्होने अपने पास में रखी हुई एक डायरी मुझे सौंपी । साथ में कागज और पेन भी दिया ।

बोले - इसमें पूरी विधि लिखी हुई है । तुम उसे लिख लो । उसके बाद अगर कहीं पर कोई डाउट है तो पूछ लेना ।

मैंने डायरी देखी । साधना की विधि पूरी उसमें लिखी हुई थी और वह लगभग बीस तीस पेज की थी । मैंने उसे लगभग दो घंटे में कागज पर नोट कर लिया । उसके बाद एक बार पूरा पढ़ कर देखा । उसमें पीठ पूजन की विधि लिखी हुई थी ।

जो देवी शक्ति होती है ! वह अपने पूरे मंडल के साथ चलती है । उसकी सहयोगी शक्तियां भी उन्हीं के साथ होती है । जब भी साधना प्रारंभ करते हैं तो बाहर के हिस्से से चालू करते हुए एक एक देवी शक्ति को पूजन करते हुए फिर मध्य में मूल शक्ति अर्थात देवी बगलामुखी की स्थापना और पूजन किया जाता है ।

इसे पीठ पूजन कहते हैं । उसके विषय में जानकारी उस डायरी में लिखी हुई थी ।

बाद में बगलामुखी देवी के विषय में धीरे-धीरे और भी जानकारी प्राप्त हुई ।
मैंने कई प्रकाशन की किताबों का अध्ययन किया । सभी ने अपनी अपनी क्षमता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ लिखने की कोशिश की है लेकिन जो मुझे बेहतर[3] लगी उसके बारे में मैं आपको बता रहा हूं ।

उन्होंने साधना गुरुवार के दिन से प्रारंभ करने के लिए कहा था और साथ ही यह भी कहा था कि शुक्ल पक्ष का गुरुवार होना चाहिए ।
इसके लिए हर चीज पीली रखी जाती है । कमरे के अंदर की दीवाल पीली होनी चाहिए । कमरे में जलने वाला बल्ब पीले रंग का होना चाहिए । आसन पीले रंग का होना चाहिए । वस्त्र पीले रंग के होने चाहिए ।
जिस बत्ती को दिए में डाला जाता है उस रुई को भी पीले रंग में रंगना होता है । यहां तक कि दिए में डालने वाला तेल भी पीले रंग का होना चाहिए जैसे सरसों का तेल .....

कुल मिलाकर हर तरफ पीला ही पीला रहना चाहिए ।

गंधक की सात ढेरिया बनाकर उसके ऊपर एक एक सुपारी रखनी थी । गंधक ना मिलने पर पीली सरसों या हल्दी से भी ढेरिया बनाई जा सकती है ।

गंधक और दुकानवाले का शक

गंधक अर्थात “सल्फर” यह किराना दुकानों में मिलता है । खासतौर से उन किराना दुकानों में जहां पर जड़ी-बूटी भी बिकती है । इसमें एक बात जो आपको मालूम होनी चाहिए वह यह है कि इस गंधक का उपयोग शायद बम बनाने में भी किया जाता है ।

उस समय मैं 22 साल का था ।
नवयुवक जो होता है ....
वह सबसे ज्यादा संदेह का पात्र होता है । उसके विषय में यह धारणा बनी होती है कि यह कुछ भी कर सकता है ।

उस समय मैं किराना दुकान पर गंधक खरीदने के लिए पहुंचा ।
जब मैंने उसे बताया कि मुझे गंधक चाहिए , तो उसने मुझे संदेह भरी निगाहों से दो-तीन बार ऊपर नीचे देखा ।
संदेह भरी आवाज मे पूछा - इसका क्या करोगे?
मैंने बताया - पूजा के लिए ले जा रहा हूं ।

उसका अविश्वास और बढ़ गया ।
जवान आदमी और पूजा ?

हम हिंदुओं में यह भी एक बहुत बड़ी गलतफहमी है ।
भगवान को बुढ़ापे की चीज माना जाता है ।
अर्थात जब हाथ पैर काम करना बंद कर दें ....
शरीर अन्य क्रियाओं के योग्य न रह जाए....
तब भगवान को याद करो ।

भगवान को याद करने के लिए भी ....
साधना करने के लिए भी.....
काफी परिश्रम की जरूरत होती है !
अगर आपको अच्छा साधक बनना है तो 15 से 25 की उम्र में आपकी साधना प्रारंभ हो जानी चाहिए ....
इसका मतलब यह नहीं है कि पढ़ाई लिखाई छोड़ कर आपको साधना करनी है ।
अपने सभी गृहस्थ वाले कार्यों के साथ-साथ आपको अपने आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी प्रयास करते रहना है ।
खैर....

उसने फिर से पूछा - कौन सी पूजा ?

खीजकर मैं बोला - आपको देना है तो दो ! नहीं तो मैं दूसरी दुकान से देखता हूं। पूजा सबको बता कर थोड़ी की जाती है।

अब मेरी बात सुनकर शायद उसे कुछ विश्वास सा हुआ ।

वह बोला - बेटा ! यह आतंकवादियों का समय है इसलिए मैं पूछताछ कर रहा था।

मैंने उससे पूछा - मैं आपको आतंकवादी लग रहा हूं क्या ?

वह बोला - नहीं, लेकिन मैं अपनी तरफ से संतुष्टि कर लेना चाहता था। इसकी बिक्री पर बैन लगा हुआ है। कई प्रकार की दवाइयों में भी इसका उपयोग होता है । उनको इस्तेमाल करने की छूट है। हम लोग कोशिश करते हैं कि जो जान पहचान के वैद्य हैं उनको दे दें। किसी नए आदमी को देने से पहले तसल्ली कर ले कि वह लोगों की जान लेने के लिए इसका इस्तेमाल तो नहीं करेगा।

मैंने पूछा - क्या यह जहर है ?

शायद उसको समझ में आ गया कि मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता ।

उसने इशारे से मुझे अपनी तरफ बुलाया और फुसफुसाते हुए कहा - गंधक का इस्तेमाल बम बनाने में भी होता है !! इसलिए उसकी बिक्री पर बैन है..... समझे ?

उसके बाद उसने मुझे गंधक दिया ।

गंधक ढेले जैसा होता है .....

उसे पीसना पड़ता है जिससे वह पाउडर जैसा हो जाए और फिर आप उसकी ढेरी बना सकें ।

अगर गंधक न मिले तो पीली सरसों या हल्दी की ढेरी पर भी आप इसे स्थापित कर सकते हैं ...

कुल मिलाकर सारी चीजों का इंतजाम हो गया और सबसे आखरी जो चीज बची थी वह थी माला .....

इस साधना में हल्दी की माला का उपयोग किया जाता है । इसके अभाव में आप रुद्राक्ष की माला का भी उपयोग कर सकते हैं ।

उस समय हल्दी की माला आसानी से नहीं मिलती थी । इसलिए हल्दी की माला खुद बनानी थी । इसके

लिए खड़ी नागपुरी हल्दी की गांठ को पानी में भिगोकर रात भर रखना पड़ता है । हल्दी उसके बाद सुबह तक वह एकदम सॉफ्ट हो जाती है । इतनी सॉफ्ट हो जाती है कि उसे आप उसे कैंची से भी काट सकते हैं ।

हल्दी की गांठों को रात भर पानी में रखने के बाद अगले दिन उसे बाहर निकालकर 109 टुकड़े काट लिए । इसमें से 108 माला में लगते और आखिरी वाला टुकड़ा सुमेरु बनता....
सुमेरु का मतलब होता है माला का वह मनका जो बाहर निकला रहता है यानी माला की स्टार्टिंग बताता है ।
उन टुकड़ों को धागे मे गूँथ लिया !
और माला बन गई .....

इस प्रकार से सारी सामग्री की व्यवस्था हो गई .....
अगले गुरुवार से साधना प्रारंभ करनी थी ।
गुरुवार को रात 9 बजे से मंत्र जाप प्रारम्भ करना था !
जो शुक्ल पक्ष का गुरुवार था ।

मंत्र क्योंकि बड़ा था इसलिए 21 माला के जाप का संकल्प लिया था ।

कुल मिलाकर सवा लाख मंत्र जाप करना था .....
यानी कि 1250 मालाएं करनी थी....
जिसके लिए लगभग 60 दिन का समय लगता ।
पहले दिन मंत्र जाप लगभग दो ढाई बजे खत्म
हुआ .....

पहली रात थी !
सामने में देवी बगलामुखी का चित्र लगा हुआ था । देवी बगलामुखी का चित्र थोड़ा उग्र स्वरूप का है । उसमें वह एक राक्षस की जीभ को पकड़कर खींचते हुए उसे गदा का प्रहार करने के लिए उद्यत महसूस होती है ।
उसे देखने से थोड़ा भय लग रहा था !!
बाकी कोई विशेष घटना नहीं हुई ।

इसी प्रकार से लगभग पंद्रह दिन का समय बीत गया ।
सोलहवीं रात्रि मैं मंत्र जाप में बैठा हुआ था । पिछले पंद्रह दिनों से कुछ विशेष घटित नहीं हुआ था ।
इसलिए मैं भी निश्चिंत होकर मंत्र जाप कर रहा था ।

अचानक मुझे ऐसा आभास हुआ कि कमरे में कोई
है .....

मैंने चारों तरफ देखा लेकिन दिखाई कुछ भी नहीं दे रहा था .....

मुझे बार-बार आभास होता था कि कोई मेरी बाईं तरफ से होकर गुजरा.....

कोई मेरी दाईं तरफ से होकर गुजरा.....

लेकिन दिखाई कुछ भी नहीं दे रहा था ।

मुझे डर लग रहा था फिर भी जैसे तैसे मैंने मंत्र जाप पूरा किया ।

इसके बाद लगभग 10 दिन वही स्थिति रही होगी ।

जाप के दौरान कमरे में किसी के होने का आभास मुझे बराबर होता रहता.....

लेकिन ...

दिखाई कोई भी नहीं देता था ।

अनहोनी का रहस्य

सत्ताईसवीं रात्रि को जब मैं मंत्र जाप करने बैठा तो अचानक दीपक बुझ गया ।

मैंने उसे फिर से जलाया ।

कुछ देर तक उसे देखता रहा । मैंने मंत्र जाप चालू किया और लगभग 5 या 6 माला मंत्र जाप पूरा हुआ होगा जब दीपक फिर से बुझ गया ।

मैंने फिर से दीपक जलाया और मंत्र जाप करता रहा ।

उस रात चार बार मेरा दीपक बुझा और मैंने उसे वापस जलाकर मंत्र जप प्रारंभ किया ।

मेरे मन में समय बहुत सारे अंधविश्वास थे । जिसमें से कुछ कुछ तो फिल्मी टाइप के थे । फिल्मों में दिखाया जाता है कि हीरो या ऐसा ही कोई महत्वपूर्ण पात्र अस्पताल में होता है, या कहीं जाने वाला होता है, और उसकी बीवी या बहन भगवान के सामने दीपक जला कर बैठी होती है और उसके मरते ही दीपक बुझ जाता है ।

मुझे लगा कि कहीं यह कुछ वैसा ही मामला तो नहीं है ...

संशय दूर करने अगले दिन मैं फिर से हरीनाथ जी के घर जा पहुंचा ।

वहां पर हरिनाथ जी बाहर ही मिल गए ।

मुझे देखते ही वे बड़े प्रसन्न हुए, बोले - और बेटा साधना कैसी चल रही है ?

मैंने कहा - हरिनाथ जी ! सब तो ठीक चल रहा है लेकिन एक संशय है । उसका निवारण आपसे चाहता हूं ।

उन्होंने कहा - पूछो !

मैंने रात वाली बात बताई और कहा - यह किसी अनहोनी का संकेत तो नहीं है ।

हरिनाथ जी ठठा कर हंस पड़े ।

बोले - बेटा सब कुछ फिल्मी नहीं होता । साधना के क्षेत्र में बहुत कुछ ऐसा होता है, जिसका कोई जवाब नहीं होता । भगवती को निरुत्तरा कहा गया है । अर्थात जिसकी क्रियाओं और घटनाओं का कोई उत्तर या कोई कारण नहीं बताया जा सकता । इसलिए इस तरह की बेवकूफी वाली बातों मे मत फँसो । मंत्र जाप करने बैठे

हो तो पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ मंत्र जाप पूरा करो ।

दीपक बुझ जाता है तो उसे फिर से जलाओ फिर बुझ जाए तो उसे फिर से जलाओ ....

लेकिन अपना मंत्र जाप पूरा करो ।

मैं उनकी बात सुनकर घर वापस लौट गया । उन्होने स्पष्ट शब्दों में मुझे कहा कि बेवजह की शंकाओं के साथ जीना छोड़ दूं ....

मैं अपना सा मुंह लेकर वापस लौट गया और फिर से रात को साधना में बैठा । आज भी दीपक बुझ जाएगा ऐसा मेरा विचार था । लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ .....

अगले 10 दिनों तक फिर से सब कुछ सामान्य रहा । कोई विशेष घटना नहीं हुई । न हीं मुझे कमरे में किसी के होने का एहसास हुआ ।

मुझे लगने लगा.....

कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं हो गई है ।

अब मुझे हरीनाथ के यहां जाने में भी थोड़ा सा संकोच लग रहा था कि वे फिर से फटकार लगा देंगे ....

वह चालीसवीं रात थी जब मुझे वापस किसी के होने का आभास मिलने लगा ....

सच कहूँ तो मुझे अंदर से बड़ी खुशी हुई !

इस बार आभास बहुत गहरा होता था !

साफ-साफ ऐसा पता चलता था जैसे कोई मेरी बगल से गुजरा हो !

मेरे कपड़े पर उसका स्पर्श मैं महसूस कर सकता था ।

यह बात सुनने में बड़ी विचित्र लग सकती है, लेकिन रात के अंधेरे में आप एक कमरे में अकेले बैठे हो....

और मंत्र जाप कर रहे हो .....

तभी.....

आपके बाजू से कोई ना दिखने वाला शख्स गुजर जाए.....

जो कि आप के कपड़ो को स्पर्श करता हुआ जा रहा हो.....

तो !

आत्मा तक कांप जाती है ।

मेरे साथ भी वैसा ही हुआ .....

हर स्पर्श के साथ मैं डर के मारे काँप जाता था.....

लेकिन जैसे तैसे मैंने उस रात भी मंत्र जाप पूरा कर लिया ।

इकतालीसवीं रात्रि को जब मैं साधना करने के लिए बैठा तो कमरे में फिर से किसी के होने का आभास होने लगा लेकिन आज के आभास में एक सौम्यता महसूस हो रही थी .....
बारह बजे के आसपास कमरे में भीनी भीनी खुशबू बिखरने लगी ....
वह खुशबू ऐसी थी जिसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता कि वह किस चीज की खुशबू थी ।
बहुत सारी खुशबूदार चीजों का मिक्स लग रहा था ।
कभी ऐसा लगता था जैसे अष्टगंध है !
तो कभी ऐसा लगता था कि हल्दी है.....

तो कभी लगता था मोंगरा है ...
तो कभी लगता था गुलाब है....
सारी रात उसी प्रकार से कमरे में खुशबू आती रही और किसी के होने का आभास भी स्पष्ट महसूस होता रहा .....

यह क्रम लगभग दो-तीन दिन तक चला ।
पैंतालीसवी रात्रि को जब मैं मंत्र जाप करने बैठा तब अचानक से किसी के अट्टहास करने की आवाज आई ।
ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेरे कमरे की छत के पास बैठ कर हंस रहा हो ...
डर के मारे मेरी घिग्गी बंध गई .....

अट्टहास के बाद काफी देर तक शांति रही ।
लगभग पांच सात मिनट के बाद मैं थोड़ा संभला और मंत्र जाप करने लगा ।
कमरे में दीपक जल रहा था जिसकी रोशनी आ रही थी ।
अचानक मैंने अपनी दाहिनी दीवार पर एक बड़े से सिर की छाया देखी .....
वह छाया कुछ-कुछ वैसी ही थी जैसे रामानंद सागर जी की रामायण में सुरसा समुद्र में दिखती थी ।
बड़ा सा सिर.....
और बिखरे हुए बाल.....

मेरी हिम्मत नहीं हुई कि मैं दाएं या बाएं देख सकूं ।
मैंने जोर से आंखें बंद कर ली और मंत्र जाप करने लगा

। उस रात कम से कम 10 बार कमरे में अट्टहास गुंजा होगा ....

उसके बाद यह अगले 3 दिनों तक चलता रहा । रोज रात को मैं साधना में बैठता और बैठने के साथ ही कमरे में उस अदृश्य शक्ति के होने का आभास होता ! अट्टहास की ध्वनिया भी गूंजती रहती ....

कुल मिलाकर मेरी हालत खराब हो गई थी और मुझे लग रहा था कि पता नहीं मैं इस साधना को पूरा भी कर पाऊंगा या नहीं ?

वह शायद पचासवीं रात थी और मैं बैठकर मंत्र जाप कर रहा था .....

कमरे में उस शक्ति के होने का आभास बराबर हो रहा था .....

डर के मारे मैं आंखें बंद करके बैठ कर मंत्र जाप कर रहा था, ताकि वह छाया या जो भी चीज हो मुझे दिखाई ना दे ।

वह भयानक आकृति

लगभग ग्यारह माला मंत्र जाप मेरा पूरा हो चुका था जब मुझे ऐसा लगा कि कोई मेरे सामने है !

उसकी सांसे मेरे चेहरे से टकरा रही है ।

मैंने डरते डरते आंखें खोली और सामने जो दृश्य देखा वह कल्पना से भी परे था ....

एक स्त्री.....

जिसकी आकृति बड़ी भयानक थी ....

आंखें बड़ी बड़ी लाल-लाल थी.....

रूखे रूखे झाड़ू जैसे बाल चारों तरफ बिखरे हुए थे !

वह ठीक मेरे चेहरे से 1 फुट की दूरी पर थी !

उसका सिर्फ चेहरा दिख रहा था !

बाकी शरीर नहीं दिख रहा था !!

ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी और दुनिया में से निकलकर इस दुनिया में झांक रही हो और केवल उसका सिर इस दुनिया में है ।

बाकी देह कहीं और है.....

उसे देखते ही डर के मारे मैं बेहोश होकर आसन पर ही गिर गया ।

उस समय रात के लगभग 11:30 या 12:00 बजे होंगे ...

उसके बाद क्या हुआ मुझे कुछ भी पता नहीं ...

जब मुझे होश आया ....

तब रात के 1:30 बज चुके थे ।

मैंने डरते डरते चारों तरफ देखा !

कमरे में कोई नहीं था !

इससे मेरी हिम्मत थोड़ी सी बढी ।

मैं अपने लिए पीने के पानी का एक लोटा भी साथ में रखता था ।

मंत्र जाप करने से शरीर में गर्मी बढ़ जाती है , इसलिए बीच-बीच में पानी पीता रहता था । उस पानी के छींटे मैंने अपने चेहरे पर मारे और फिर चारों तरफ देखा ...

वाकई में कोई नहीं था .....

लेकिन.....

डर तब भी लग रहा था !

मैंने अपने आप से कहा कि बेटा जब ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना ?

चल चालू कर....

मैंने मंत्र जाप चालू कर दिया । पांच मालाएं पूरी हुई होगी जब फिर से कमरे में किसी के होने का एहसास होने लगा ।

अभी भी मेरी पांच मालाये बाकी थीं !

मैंने सोचा कि अगर मैंने उसे दोबारा से देख लिया तो 5 मालाएं पूरी नहीं कर पाऊंगा इसलिए अपनी आंखों को जोर से भींचा और बैठकर मंत्र जाप करने लगा .....

मंत्र जाप करते करते जब आखिरी माला चल रही थी, तब !

मैंने हिम्मत करके धीरे से अपनी आंखें खोली.....

शायद यह मेरी गलती थी .....

क्योंकि वह आकृति ....

अभी भी ठीक मेरे चेहरे के सामने उसी प्रकार से बैठी थी ।

मैंने फिर से आंखें बंद कर ली और जल्दी जल्दी माला पूरी कर ली ।

अब मेरा जाप पूरा हो चुका था !

मैंने से धीरे से आंखें खोली ....

लेकिन वहां पर कुछ भी नहीं था ....

केवल दीपक की लौ भरभरा कर जल रही थी

अगले 5 दिनों तक वह आकृति बराबर कमरे में दिखाई देती रही .....
कभी मेरे सामने !
कभी मेरे दाएं !
तो कभी मेरे बाएँ ....
वह कुछ कर नहीं रही थी .....
इसलिए धीरे-धीरे मैं भी उसके साथ कंफर्टेबल हो गया था और आराम से मंत्र जाप कर ले रहा था ।

वह छप्पनवीं रात थी.....
अब मुझे सिर्फ पाँच दिन और साधना करनी थी और मेरा पुरश्चरन पूरा हो जाता .....
इस बात की खुशी थी और विश्वास भी लग रहा था कि मैं इस साधना को पूरा कर पाऊंगा ....

उस रात जैसे ही मैं मंत्र जाप करने के लिए बैठा , वह आकृति मेरे सामने उपस्थित हो गई.....
अब क्योंकि रोज का अनुभव वैसा ही हो रहा था
इसलिए मैं भी मंत्र जाप करता रहा ....

लेकिन वह रात सामान्य रात नहीं थी .....
उस रात कुछ अलग घटित होना था....

काफी देर तक सब कुछ सामान्य चलता रहा और मैं भी निश्चिंत होकर अपने मंत्र जाप में लीन था । रात के लगभग 12:30 बजे के आसपास उसने मुझे एक ठोकर मारी ....
ठोकर अच्छी खासी तेज थी ...
मुझे काफी दर्द हुआ लेकिन मैं संभल कर फिर मंत्र जाप करने लगा ...
तब तक मेरा 20 माला मंत्र जाप हो चुका था ।

पंद्रह मिनट के बाद उसने मुझे फिर से एक लात मारी और कहा - बंद कर यह सब !!!
वह लात इतनी तेज थी कि मैं अपने आसन से दूर जा गिरा !
अब मैं डरा सहमा सा जमीन पर पड़ा हुआ था और वह आकृति क्रोध से चिल्लाती हुई मेरी तरफ देखते हुए खड़ी थी .....

मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं ?

पांच सात मिनट तक वह आकृति वहीं खड़ी रही !
उसके बाद गायब हो गई !!
उसके गायब होने के बाद भी मैं सदमे में पांच दस मिनट वहीं जमीन पर बैठा रहा .....
जब थोड़ा संभला तो फिर आसन पर बैठकर मैंने मंत्र जाप चालू कर दिया । उस रात उस महाशक्ति ने फिर दर्शन नहीं दिए । इसलिए मंत्र जाप आसानी से पूरा हो गया ।
लेकिन.....
हर पल मुझे यही आशंका रही कि ॥
वह अब आई.....
और तब आई.....

अगले दिन सुबह सुबह मैं हरी नाथ जी के यहां जा पहुंचा ।
उनको मैंने सारी कथा कह सुनाई और कहा - मुझे इतना डर लग रहा है कि मेरी हिम्मत नहीं हो रही है कि मैं मंत्र जाप करने के लिए बैठूँ । उसने जो लात मुझे मारी थी, उससे मेरी छाती और पेट में अभी भी दर्द हो रहा है ।

हरीनाथ जी मुस्कुराए और बोले - बेटा ! तंत्र साधनाओं का क्षेत्र भगवती के हस्तक्षेप का क्षेत्र है ! भगवान शिव की कृपा का क्षेत्र ! हर कोई तंत्र साधना के क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकता ।

जब भी कोई तंत्र का गुरु पृथ्वी पर जन्म लेता है तो उसका शिष्य मंडल भी साथ में आता है ।

जगदंबा और भगवान शिव स्वयं निश्चित और निर्धारित करते हैं कि कौन इस क्षेत्र में आएगा ।

अगर ऐसा नहीं होता तो भारतवर्ष तो तंत्र साधकों से भरा हुआ होता !

यहां तो पिछले हजारों वर्षों से तंत्र साधना की परंपरा चली आ रही है ।

मैंने कहा - आपकी बात तो सही है लेकिन इन सब से मेरा क्या संबंध ?

आप सोचेंगे की बात तो स्पष्ट है फिर मैं ट्यूबलाइट क्यों हो गया । सच कहूं तो उस उम्र में मै ट्यूबलाइट ही था । नई पीढ़ी के बच्चों की बौद्धिक क्षमता को देखने के बाद कई बार लगता है कि हम वास्तव में उनकी उम्र में बिल्कुल ट्यूबलाइट ही थे ।

मैं सोच रहा था कि मैं तो अपनी समस्या बताने के लिए गया था और हरीनाथ जी ज्ञान बांट रहे थे इसकी वजह से मैं समझ नहीं पा रहा था कि वह कहना क्या चाहते हैं ?

फिर उन्होंने बात को स्पष्ट करते हुए कहा - तू तो साधना करने के लिए ही पैदा हुआ है ! तो तू साधना कैसे छोड़ सकता है .....
उस समय मुझे उनकी बात समझ नहीं आई थी .....
लेकिन बाद में जब डोम बाबा के साथ विभिन्न साधनाओं में संलग्न हुआ .....
तब मुझे उनकी बात समझ में आई ।
गुरु अपने शिष्यों को बिल्कुल वैसे ही ट्रेन करता है जैसे कमांडो ट्रेनिंग के दौरान सैनिकों को किया जाता है । हर परिस्थिति में जीने के लिए तैयार !
वैसे ही साधक भी हर परिस्थिति में साधना करने के लिए तैयार ....

उस दिन उन्होंने एक जीवन सूत्र दिया !
मैं इसे जीवन सूत्र इसलिए कह रहा हूं क्योंकि मेरे जीवन में इसका बहुत बड़ा महत्व रहा !

साधना के क्षेत्र में जब भी मुझे कोई दिक्कत आई मैंने इसी सूत्र का पालन किया !

इसी के द्वारा मैं बड़ी से बड़ी समस्या से बाहर निकल आया ....

वह सूत्र था -

अपने गुरु पर विश्वास कर !

जहां तू फस जाए वहां उनको दिल से याद कर ! !

रास्ता अपने आप निकल आएगा ....

और भी बहुत सारी बातें उन्होंने कहीं ....

कुल मिलाकर मेरा टूटा हुआ आत्मविश्वास उन्होंने जगा लिया और मैं फिर से दृढ़ निश्चय होकर साधना करने के लिए तैयार हो गया !

यह सारी बातें अपनी जगह पर है .....

लेकिन ....

यह भी एक सच्चाई थी कि ....

मुझे डर लग रहा था !

अंदर ही अंदर कहीं ना कहीं मुझे जबरदस्त डर लग रहा था .....

क्योंकि .....

कल की रात पड़ी हुई लात !

और उसका दर्द !!

अभी तक मुझे महसूस हो रहा था ।

अब कुल मिलाकर 4 रातें बची हुई थी !

पता नहीं !

इन चार रातों में क्या-क्या और होना बाकी था ...

सत्तावनवी रात और मास्टर की

सत्तावनवीं रात को मैं फिर से मंत्र जाप करने के लिए बैठा ।

अंदर ही अंदर डर भी लग रहा था कि आज फिर लात खानी है !

हुआ भी वही ....

जैसे ही मैं मंत्र जाप करने के लिए अपने आसन पर बैठा.....

एक जोरदार लात मेरी पीठ पर पड़ी ।

मैं सावधान था इसलिए दीवाल का सहारा लेकर अपने आप को गिरने से बचा लिया ।

मेरी समझ में यह बात आ गई थी कि आज की रात बड़ी मुश्किल होने वाली है ।

मैंने मंत्र जाप प्रारंभ किया ।

उसके बाद वह मेरे इर्द-गिर्द घूमती रही ।

उसने फिर दूसरी लात नहीं मारी ....

मैं अगली लात के इंतजार में डरता सहमता मंत्र जाप करता रहा ।

अट्ठारह माला का मंत्र जाप मेरा पूरा हो चुका था ।

अचानक उसने मेरे बाल पकड़ लिए और कहा - तुझे मेरी बात समझ नहीं आ रही है क्या ?
बंद कर यह मंत्र जाप ....

उसका भयानक सिर मेरे मुंह के पास था ।
उसकी सांसों की हवा को मैं महसूस कर सकता था ।
उसके मुंह से निकलती हुई आवाज किसी लाउडस्पीकर से गूंजती हुई आवाज जैसी लग रही थी .....
ऐसा लग रहा था जैसे कान के पर्दे फट जाएंगे .....
अब मुझे लगने लगा कि मुझे यह मंत्र जाप छोड़ देना चाहिए ! नहीं तो मुझे सच मे यह मार डालेगी ।
अचानक से.....
मुझे हरीनाथ जी के द्वारा बताया हुआ जीवन सूत्र याद आया .....

मैंने गुरु जी को याद किया और 11 बार गुरु मंत्र का जाप किया ....
तभी.....
मुझे अपने सिर पर से उसके हाथ की पकड़ ढीली होती हुई महसूस हुई !
उसने मेरे बालों को छोड़ दिया था !!

यह थी गुरु मंत्र की शक्ति ....

यह था गुरु मंत्र की शक्ति का मेरा पहला अनुभव.....

जैसे ही उसने मेरे बालों को छोड़ा .....

मेरा आत्मविश्वास सातवें आसमान पर पहुंच गया ।

मुझे समझ में आ गया कि गुरु मंत्र का जाप करने से इस महामाया से बचा जा सकता है .....

बस फिर क्या था !

मैंने दुगने जोश से मंत्र जाप करना प्रारंभ कर दिया ।

सारी रात वह कमरे के अंदर ही घूमती रही !

लेकिन !

उसने दोबारा मेरे बाल नहीं खींचे ....

और ना ही कोई लात मारी !

अब मैं निश्चिंत होकर मंत्र जाप कर रहा था ।

अब कुल 3 माला ही बची थी जो कि लगभग आधा पौन घंटे में पूरी हो गई ।

पूरी होने के बाद मैंने गलतियों के लिए क्षमा प्रार्थना की ।

माता जी के चरणो में और गुरु जी के चरणों में प्रणाम करके वही पर सो गया ।
जो कि मेरा रोज का नियम था ।
साधना करने के बाद साधना कक्ष में ही सोने का विधान है ...
उस समय लगभग तीन बज रहे थे..... जब मैं सोया ।

सुबह चार बजे के आसपास मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मेरा गला दबा रहा है ....
मुझे अपनी सांस टूटती हुई सी महसूस हो रही थी । मेरी आंखे खुल गई । देखा तो वही आकृति फिर भयानक स्वरूप में मौजूद थी ....
मैंने सोचा कि अब मेरे पास मास्टर-की थी ....
मैंने गुरु मंत्र का जाप करना चालू कर दिया । लगभग 5 मिनट में उसकी आकृति वहां से लुप्त हो गई और मैं फिर तान कर सो गया .....

अब कुल मिलाकर 3 रातें और बची हुई थी । अगर उन्हें में पार कर लेता तो देवी बगलामुखी का एक पुरश्चरण मेरा संपन्न हो जाता ।

अभी तक जो घटनाएं घटी थी वह डरावनी तो थी
लेकिन उन घटनाओं से मेरा मनोबल काफी बढ़ गया था
।
साथ ही गुरु मंत्र के चमत्कार को देखने के बाद यह
विश्वास भी प्रबल हो गया था कि गुरु ही शिव है ।
जो शक्ति को नियंत्रित कर ले वह शिव है....
इतनी विकराल शक्ति जिसके मंत्र जाप से शांत हो
गई ....
वह शिव का स्वरूप ही हो सकता था.....

अट्ठावनवीं रात मैं और ज्यादा आत्मविश्वास के साथ
साधना में बैठा ।
उस रात कोई घटना घटित नहीं हुई ।
पूरी रात बड़ी शांति से गुजर गई ।
मैं हर क्षण कोई नई चीज के होने का इंतजार करता
रहा ....
लेकिन कुछ भी नहीं हुआ ।
मैं बड़े आराम से 21 माला मंत्र जाप करके वही साधना
कक्ष में सो गया ।

उनसठवां दिन ....

उस दिन दोपहर को .....

मीना भाभी ने मेरे कमरे का दरवाजा खटखटाया । मैंने दरवाजे के छेद में से झांक कर देखा !

तो सामने मीना भाभी थी !!

मुझे पिछला अनुभव बहुत अच्छी तरह से याद था !

मैंने गुरु जी का नाम लिया और चुपचाप जाकर बिस्तर में लेट गया । लगभग पाँच सात मिनट तक वह दरवाजा खटखटाती रही, लेकिन मैंने कोई जवाब नहीं दिया और वह वापस चली गई .....

फिर मेरी नींद लग गई .....

अंतिम परीक्षण

नींद में मैंने सपना देखा !

सपने में गुरुदेव दिखाई दिए !

उन्होंने कहा - बेटा तेरी साधना अच्छी जा रही है ! आज की रात तेरे परीक्षण की आखिरी रात है !!

मैं भी देखना चाहता हूं कि मेरा शिष्य कितनी क्षमता रखता है !!!आज तुझे अपने दम पर हर परिस्थिति का सामना करते हुए मंत्र जाप पूरा करना है ।

इतना कहकर वे लुप्त हो गए ....

यह मेरे लिए बड़ी खुशी की बात थी !

मैंने गुरु मंत्र का सवा लाख मंत्र जाप किया था लेकिन गुरु जी के स्वप्न में या किसी भी प्रकार से दर्शन नहीं हुए थे !

इसलिए यह अनुभव मुझे बेहद सुखद लगा और उत्साहवर्धक भी .....

लेकिन.....

उनकी बात से मैं थोड़ा सा विचलित भी हुआ । उनकी बात का मतलब यह था कि आज की रात मुझे अपने दम पर परीक्षणों का सामना करना है ।

यानि आज अपना जीवन सूत्र काम नहीं करेगा ?
बात तो बड़ी गड़बड़ थी ।
गुरु मंत्र के जाप से परिस्थितियां नियंत्रित हुई थी ।
इससे मेरा कॉन्फिडेंस बहुत बढ़ गया था, लेकिन अब आज की रात उस कॉन्फिडेंस के बिना बैठना था ।
फिर जब सोचा तो मुझे लगा - जब गुरुदेव मुझ पर विश्वास कर रहे हैं तो मैं अवश्य इस परीक्षण को भी पार कर जाऊंगा ...

उनसठवीं रात थी !!!
रोज की तरह मैं लगभग नौ बजे मंत्र जाप करने के लिए बैठ गया ।
आज दीपक की लौ लहरा लहरा कर जल रही थी ।
ऐसा लग रहा था जैसे नृत्य कर रही हो ।
पाँच माला का मंत्र जाप पूरा होते-होते कमरे में भारीपन आने लगा । यह तब आता था जब वह भयानक आकृति प्रकट होने वाली होती थी । सातवीं माला होते-होते वह आकृति आकर मेरी बगल में बैठ चुकी थी ....

अब उसका स्वरूप एक महिला के जैसा था , जो काले रंग की साड़ी पहनी हुई थी । चेहरा भयानक था , लेकिन आकार एक सामान्य महिला के जैसा था .... वह घूर घूर कर मुझे देख रही थी..... कुछ देर तो मैं उसे नजर चुराकर देखता रहा, फिर मैंने आंखें बंद करके अपना मंत्र जाप चालू कर दिया ।
जब लगभग 15 मालाओं का मंत्र जाप हो चुका था , वह आसन से उठ गई ....
यानी अब परीक्षण प्रारंभ होने वाला था ।

उसके बाद बहुत कुछ हुआ ....
उस आकृति ने मेरे बाल खींचे !
थप्पड़ मारे !!
लाते बरसाई !!!
घूंसे चलाए ...
और न जाने क्या-क्या ....
कुल मिलाकर समझ लीजिए कि पूरा थर्ड डिग्री जैसा अनुभव होता रहा ।

मैंने बीच में होशियारी दिखाते हुए गुरु मंत्र का जाप भी किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ ।

तब मेरी समझ में आया कि गुरु जी ने ऐसा क्यों कहा था ...

यानि महाविद्या साधना के लिए परीक्षण तो देना ही पड़ेगा ...

मैंने मन ही मन सोच लिया कि जो भी हो जाए मंत्र जाप तो पूरा करके ही उठना है ।

आप जो जो घटनाएं घटी उसको इसी बात से समझ सकते हैं कि जो मंत्र जाप मेरा डेढ़ दो बजे खत्म हो जाता था वह मंत्र जाप उस दिन सुबह साढ़े चार बजे खत्म हुआ ...

वह भी ले देकर बड़ी मुश्किल से ....

इक्कीसवीं माला पूरी होते-होते मेरी हालत खस्ता हो चुकी थी ....

ऐसी हालत कि मैं आसन से हिलने की स्थिति में भी नहीं था ।

वही माला को रखकर मैंने हाथ जोड़े और आसन पर ही लुढ़क गया ....

कब नींद लग गई या बेहोश हो गया ।

मुझे पता नहीं चला !

साठवाँ दिन और बेसन का हलवा

अंततः ....

वह आखिरी यानि साठवाँ दिन था .....

साढ़े आठ बजे किसी ने दरवाजा खटखटाया तब मेरी आंखें खुली .....

दरवाजा खोलकर देखा !

सामने एक बेहद खूबसूरत युवती खड़ी थी !

उसने पीले रंग के कपड़े पहने हुए थे और उसकी उम्र यही कोई 18-20 साल रही होगी ।

मैंने उसे इसके पहले कभी नहीं देखा था ।

दरवाजा खुलते ही उसने बताना चालू किया - हमारी पीतांबरा डेयरी है ! हम लोग घी बनाते हैं । शुद्ध गाय का घी बेचते हैं । अगर आप लेना चाहे तो ले सकते हैं ।

उसने उसकी कीमत वगैरह बताई ।

मन में विचार आया कि घी ले लो !

आज आखिरी दिन है ....

तो आज सरसों की जगह घी का दीपक लगाया जाए ।

उस समय गाय के घी की कीमत ₹80 किलो थी ।

उस दिन मेरे पास कुल जमा ₹35 थे ।
उसने मुझे गिनते हुए देख लिया था ।
वह बोली – हम ! आधा किलो के साथ आधा किलो फ्री दे रहे हैं । आप बाकी पैसे बाद में दे देना ।
यह बात मुझे जमी !
मैंने ₹35 उसे दे दिया ।

उसने आधा आधा किलो घी का दो पैकेट मुझे दे दिया ....
घी के पैकेट को मैंने चौकी के पास रख दिया और फिर से सो गया ।
अब की नींद लगभग शाम 7 बजे के आसपास खुली ....
बड़े जोरों की भूख लगी हुई थी .....
कमरे के एक छोर पर रसोई थी ।
हलवे की खुशबू आ रही थी ....
पहले तो मैंने सोचा कि पड़ोस में कहीं बनी होगी ।

मन ललचा रहा था !
किसी तरह से उसे मनाया ...

फिर यह सोच कर रसोई की तरफ बढ़ा कि चलो कुछ बनाकर खाया जाए ।

वहां पहुंचा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा !

घी का एक आधा किलो का पैकेट वहां खुला हुआ रखा था और कढ़ाई में बेसन का हलवा बना हुआ रखा था ।

तभी मुझे याद आया !

अरे ! हरीनाथ जी ने आखिरी दिन बेसन का बना हुआ प्रसाद चढ़ाने के लिए कहा था !

जो मैं भूल चुका था .....

मैं यह सोचकर परेशान था कि बंद कमरे में आखिर हलवा बनाकर कौन रख गया ...

फिर माथे को झटका !

विचारों को एक किनारे रखा !

पहले एक छोटे टिफिन में भगवती के प्रसाद के लिए उस हलवे का एक हिस्सा निकाल कर चौकी पे रख दिया ।

उसके बाद बचे हुए हल्वे को उदरस्थ कर गया !

बेसन का हलवा मैंने कई बार खाया है, लेकिन उस हलवे का स्वाद ही कुछ अलग था ।

रात की घटनाओं की वजह से पैदा हुआ मानसिक विचलन कहिए या थकावट कहिए या नींद कहिए जो भी हो थोड़ी देर में वह सब विचार मेरे मन से निकल गया ।

मैं नहा धोकर रात्रि साधना के लिए तैयार हो गया ....

नहाने के बाद दिमाग थोड़ा शांत हुआ ....

तो मुझे ध्यान आया ....

यह दरवाजा तो मैंने अंदर से बंद किया था....

फिर रसोई में आकर हलवा किसने बनाया ?

काफी देर सोचने के बाद भी जब कोई उत्तर नहीं मिला तो मैंने भी उस पर चिंतन करना छोड़ दिया ।

रात की साधना के बारे में सोचने लगा ।

दीए में डालने के लिए घी आ चुका था तो दिये को धोकर साफ किया और उसमें सरसों के तेल की जगह घी डालकर बत्ती लगाई ...

तभी....

मेरी नजर चौकी में रखे हुए ₹35 पर पड़ी .....

अरे !

यह कहां से आ गए ...

फिर मुझे ध्यान आया .....

यह ₹35 तो मैंने उस घी वाली लड़की को दिए थे !

फिर यह वापस मेरे पास कैसे आ गए .....

देवी को निरुत्तरा इसीलिए कहा गया है क्योंकि उसके क्रियाकलापों का और उन क्रियाकलापों के लिए किए गए किसी प्रश्न का कोई उत्तर नहीं होता ।

वह स्वच्छंद है !

स्वतंत्र है !!

और उसके द्वारा किए जाने वाले कार्य भी उसी प्रकार से किसी भी प्रश्न से परे हैं ...

खैर.....

काफी देर सोचने के बाद जब कोई जवाब नहीं मिला तो मैं वापस अपने काम में लग गया ।

वह साठवीं औरआखरी रात थी ....

मेरे मन में जबरदस्त उत्साह था ....

कहीं गहरे में थोड़ा भय भी था ...

पता नहीं आज का आखरी परीक्षण कैसा होगा ....

समय पर मंत्र जाप प्रारंभ हुआ !
एक माला दो माला धीरे-धीरे बढ़ते हुए 11 माला तक मंत्र जाप पूरा हो गया !
ग्यारहवीं माला पूरी होते-होते वह भयानक आकृति फिर से प्रकट हो गई ।

मन में भय का संचार होने लगा ....
सोचकर कि कल वाले अनुभव से फिर गुजरना पड़ेगा ।
आखरी रात थी !
छोड़कर जाने का तो सवाल ही नहीं था इसलिए आने वाले परीक्षण की प्रतीक्षा करते हुए मंत्र जाप करता रहा ।

उसका अत्याचार का क्रम चालू हो गया ...
कभी वह बाल खींचती !
कभी गर्दन दबाती!
कभी लात मारती और
कभी चिमटी काटती.....
कुल मिलाकर हर संभव प्रयास कर रही थी कि मैं आसन छोड़ दूं !

मैं दर्द के मारे बीच-बीच में चीख पडता था । उसके ऊपर उसका कोई असर नहीं पड़ता था ...

जैसे तैसे मेरा मंत्र जाप जारी था !
उस डेढ़ घंटे में मुश्किल से मेरा तीन माला मंत्र जाप पूरा हुआ था । अब कुल मिलाकर 14 माला का मंत्र जाप हो चुका था । इसी से आप अंदाज लगा सकते हैं कि मेरा मंत्र जाप किस गति से चल रहा होगा और उसका परीक्षण किस गति से चल रहा होगा .....
चौदहवीं माला पूरी होते-होते वह वहां से लुप्त हो गई । अगली दो-तीन माला तक में बीच-बीच में इधर उधर देखता रहा लेकिन वह कहीं दिखाई नहीं दे रही थी ....
अट्ठारहवीं माला के साथ कमरे का वातावरण पूरी तरह से बदल गया ।
जहां पहले कमरा भारी भारी लग रहा था , अब एकदम हल्का-फुल्का किसी बगीचे की तरह मनोरम होने लगा ...
मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मैं किसी खुले प्राकृतिक उद्यान में बैठा हूं.....

हम चाहे कितनी भी एसी या कूलर लगा ले लेकिन बारिश की बूंदों के साथ मिट्टी की सोंधी महक लेती हुई जो ठंडी हवा होती है.... उस आनंद की बराबरी हम नहीं कर सकते ।

उस हवा में जो तृप्ति का अहसास होता है वह अद्भुत होता है !

कुछ-कुछ वैसा ही एहसास मुझे अपने कमरे में हो रहा था .....

कमरे में अद्भुत शांति छा गई ...

ऐसा लग रहा था जैसे सब कुछ थम सा गया हो ....

मेरा बीसवीं माला का मंत्र जाप जारी था ....

मन गहरे उत्साह से भरा हुआ था कि मैंने महाविद्या साधना का एक पुरश्चरण पूरा कर लिया है या यूं कहिए कि पूरा करने से सिर्फ एक माला की दूरी बची हुई थी ....

बीसवीं माला समाप्त होते होते सामने रखे हुए बगलामुखी देवी के चित्र में पीला पीला प्रकाश फैलने लगा .....

इक्कीसवीं माला का जाप लगभग आधा हुआ होगा
जब मैंने देखा कि बगलामुखी देवी के चित्र की जगह में
एक बिम्ब उभर रहा है.....
जो कि किसी सूंदर युवति जैसा दिखाई दे रहा था .....
जिसने पीले रंग की ओढनी ली हुई थी...
कान मे नाक मे और गले मे सोने के आभूषण थे ....
इक्कीस माला पूरी होते-होते वह बिंब पूरी तरह से स्पष्ट
हो गया .....
मैं उस बिम्ब को आंखें फाड़ फाड़ कर देख रहा था ....
यह तो वही युवती थी ....
जो सुबह घी लेकर आई थी .....

अब उसका बिंब देवी के चित्र के साथ एकदम स्पष्ट
दिख रहा था ।
मेरी समझ में थोड़ी देर तक कुछ नहीं आया ....
फिर मैंने चौकी पर रखा हुआ बेसन का हलवा आगे
बढ़ाकर हाथ जोड़ लिए.....
कमरा बेहद मनमोहक हंसी से गूंज उठा - मेरा ही बनाया
हुआ हलवा मुझे खिला रहा है....

मैं आश्चर्य और अविश्वास के सागर में डूबता उतराता हुआ उन दिव्य शब्दों को सुन रहा था ।

मेरे पास बोलने के लिए शब्द नहीं थे कि मैं क्या बोलूं ?

सामने जो भी दिख रहा था वह मेरे लिए बिल्कुल अद्भुत था !

समस्त सृष्टि की स्वामिनी जगत जननी महामाया बिम्ब स्वरूप में सामने मौजूद थी ....

काफी देर के बाद मुझे होश आया और मैंने उन्हें दंडवत प्रणाम किया ।

जब मै उठा तो वह बिम्ब लुप्त हो चुका था और कमरे मे हल्दी की खुशबू फैली हुई थी ....

कच्ची हल्दी जैसी .....

भीनी भीनी.....

अगले दिन हरीनाथ जी से मिला !

सब कुछ बताया !

वे बड़े प्रसन्न हुए ...

उस दिन उन्होने स्वयं उस स्वर्ण प्रतिमा का पूजन मुझसे सम्पन्न करवाया और मुझे एक बगलामुखी का तांबे से बना यंत्र दिया, जो आज भी मेरी जेब मे रहता है .....

उस साधना के बाद .....

अगर मैं किसी की आँखों मे आँखें डाल मन मे एक बार इस मंत्र का उच्चारण कर लेता था...

तो...

क्या बच्चा !

क्या युवा !

क्या बुजुर्ग !

क्या पुरुष !

क्या स्त्री !!

हर कोई अपनी नजरें झुका लेता था .....

बहस करना मेरी आदत मे शुमार था ...

उस साधना के बाद मुझसे बहस करने वाले मेरे मित्र भी पाँच मिनट मे हार मान लेते थे । वे अपनी बात और पक्ष रख ही नहीं पाते थे जैसे कोई उन्हे अपने तर्क रखने से रोक रहा हो ..

वाकई बगलामुखी देवी मुख स्तंभन कर देती है .....

शरीर मे ऊर्जा इतनी रहती कि सुबह 5 बजे उठने से लेकर रात सोने तक कभी जम्हाई तक नहीं आती थी ....

उसके बाद छह महीने तक मुझे अपने आसपास खुशबू का एहसास होता रहता था ....

रोज मैं एक माला जाप करता था ....

छह माह बाद माला से मेरा विवाह हो गया ...

विवाह होने के बाद वही हुआ जो होता है ....

नयी शादी!

रूपवती !

मादक यौवन युक्त पत्नी ....माला !

उसका मादक यौवन .....

उसका साहचर्य ....

उसकी देह का रसास्वादन .....

उस सुख के आगे सब बेमानी लगने लगे ...

और ....

फिर पूजन सिमटते सिमटते अगरबती लगाकर हाथ जोड़ने तक सीमित होता चला गया ...

धीरे धीरे मंत्र जाप और साधना सब छूट गया ....

.....समाप्त .....

अघोरानंद सीरीज :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
10. अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
11. अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।
12. अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार ।
13. अघोरानंद और जटाधारी वैशाली ।
14. अघोरानंद और चाँदनी महल की आत्माएं ।
15. अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्गं ।
16. अघोरानंद और चम्पा बंजारन ।
17. अघोरानंद और एंबरग्रीस ।

18. अघोरानंद और कपालिनी का रहस्य ।
19. अघोरानंद डोम बाबा और विनोदिनी ।

कापालिक सीरीज :-

1. कापालिक चंडेश्वर ।
2. कापालिक चंडेश्वर और पूर्णानन्द ।

अन्य कथाएँ :-

1. वह रहस्यमय युवती ।
2. परेतिन की शादी ।

पिशाचिनी सीरीज:-

1. पिशाचिनी का घेरा ।
2. ज्योतिषाचार्य और पिशाचिनी ।

साधना विधियाँ :-

1. गुरुपूजन की विधियाँ ।
2. मंत्र साधना और गुरु की आवश्यकता ।
3. अकाल मृत्यु तथा रोग नाशक मंत्र ।
4. श्री गणेश पूजन की विधियाँ ।
5. महालक्ष्मी पूजन ।

---

[1] विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें "अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी"

[2] विस्तृत जानकारी के लिये मेरी रचना "तांत्रिक अघोरानंद" पढ़ें

[3] *आप "साधना सिद्धि विज्ञान" की सदस्यता लेकर भी इस विषय में और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह एक मासिक पत्रिका है। जो भोपाल से प्रकाशित होती है। इसके विषय में अधिक जानकारी के लिए आप इस वेबसाइट पर जा सकते हैं -* **namobaglamaa.org**

इसके अलावा इस विषय पर और जानकारी के लिए आप "श्री बगला कल्पतरु" ग्रंथ का अध्ययन कर सकते हैं जो कल्याण मंदिर प्रकाशन से प्रकाशित है जिसका पता है :-

श्री चंडी धाम, प्रयाग राज , 211006, फोन - 0532-250 27 83 , मोबाइल - 9450222767

इस प्रकाशन की खासियत यह है कि आपको शुद्ध त्रुटि रहित मंत्र प्राप्त होंगे।